असली He Man

हिंदी विवेक
WE WORK FOR A BETTER WORLD
Issue : 30 November-06 December 2025

Finest Saffron In The World
5g
50mg
1g
Pack Size Available
0.25g
0.5g
Haldiram's
Benefits Of Saffron
• Boosts Brain Health
• Improves Digestion
• Improves Vision
• Prevents Hair Loss
PURE & NATURAL
Haldiram's
Vipin Aggarwal
THE SAFFRON EXPERT
TM
केसर तिलक
★दिव्यता ★ समृद्धि ★ शुभ भाग्य
★संपत्ति ★ कैरियर के अच्छे अवसर
अपने भीतर बुद्धि, दूरदर्शिता समृद्धि और भक्ति बढाने के लिए केसर तिलक लगाऐ।
तिलक लगाने का अर्थ है चक्रों और ऊर्जा बिंदुओं को सक्रिय करना जिससे आपके भीतर अधिक सामंजस्य और खुशी का विकास होता है। केसर तिलक **आज्ञा चक्र** पर लगाया जाता है, जो माथे का मध्य भाग है, यह चक्र दिव्यता, अंतर्ज्ञान और बुद्धि से संबंधित है। मनुष्य के सभी कार्य इसी विशिष्ट बिंदु द्वारा नियंत्रित होते हैं, और संतुलित होने पर यह भावनात्मक, शारीरिक और आध्यात्मिक ऊर्जा को बढाता है। **विशुद्धि चक्र** का संबंध संचार और अभिव्यक्ति से है। नाभि मनुष्य के शरीर का सबसे महत्वपूर्ण बिंदु है और यह मानव जीवन का केंद्र है जो **मणिपुर चक्र** से संबंधित है।*
ज्योतिषीय दृष्टि से केसर का तिलक बृहस्पति (बुद्धि, धन, आध्यात्मिकता), बुध (वित्त, बुद्धि, संचार, भावनात्मक ऊर्जा), केतु (अंतर्ज्ञान, अंतर्दृष्टि और आंतरिक शांति की भावना) और मंगल का समर्थन) की ऊर्जा को संतुलित करता है।*
केसर तिलक कैसे तैयार करें
कुछ पिसे हुए केसर के रेशे (धागे) या केसर पाउडर लें, उसमें पवित्र जल या गंगाजल की कुछ बूँदें डालकर पेस्ट बना लें। आपका केसर का तिलक तैयार है। अपने जीवन को बेहतर बनाने और ऊर्जा बिंदुओं को संतुलित करने के लिए **अनामिका उंगली** से माथे, कानों, गले और नाभि पर लगाएँ। चाँदी की डिब्बी में इसे तैयार करना व रखना अधिक शुभ माना जाता है।
*Data on file
GROCERIES IMPEX : +91-9999092561, 9650635204 | vipin@groceriesimpex.com
Registered Office Address : R-49, Rita Block, Shakarpur, Delhi-110092.
Packing Unit : D-94/A, Matiala Extension, Dwarka, New Delhi-110059.

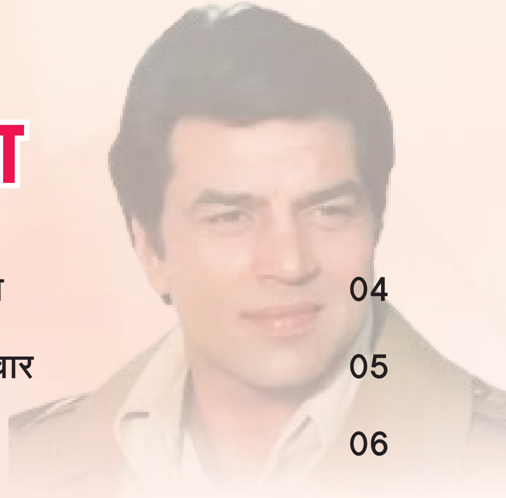

अनुक्रमणिका

आंखों से टपकती शालीनता	शशांक दुबे	04
वर्षों बीते आस में...	अतुल गंगवार	05
कुत्ते, कमीने, मैं तेरा खून पी जाऊंगा...	संकलन	06
सम्पूर्ण हुआ श्रीरामजन्मभूमि मुक्ति यज्ञ	मृत्युंजय दीक्षित	08
नहीं मिल रही सुरक्षित ठौर...	विप्लव विकास	10
परम्परा, परिवर्तन और भविष्य का राष्ट्रीय संकल्प	अलकेश चतुर्वेदी	13
आत्मनिर्भरता की ओर भारतीय नौसेना	डॉ. सुरेंद्र कुमार मिश्र	15
सांस में घुलता प्रदूषण	अर्पणा झा	17
मराठी भाषा की बलि चढ़ा मराठी युवा छात्र	डॉ. हिमांशु थपलियाल	19
हिडमा का समर्थन राष्ट्रघाती है	डॉ. उदय भान सिंह	21
पुराने वाहनों पर शिकंजा	संकलन	23
परम्पराएं और पीछे छिपे तथ्य	लवकुश तिवारी	24
तन और मन को सुकून देता स्पा	संकलन	26
संघ के साहित्यिक योद्धा रंगा हरि	डॉ. नीतू गोस्वामी	27
बाल साहित्यकार द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी	संकलन	28
समाचार	–	29

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

पंजीयन शुल्क

वार्षिक मूल्य : 500 रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : 1200 रुपये
पंचवार्षिक मूल्य : 1800 रुपये, आजीवन मूल्य : 20,000 रुपये

कार्यालय : प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067 फोन नं. : 022-28675299, 022-28678933

स्मृति शेष

आंखों से टपकती शालीनता

भारतीय फिल्म जगत में सबसे लोकप्रिय व सफल अभिनेताओं में धर्मेंद्र का नाम आता है। वे रोमांटिक हीरो के रूप में, एक्शन हीरो के रूप में तथा डायलॉग बोलने के अंदाज, आवाज व हल्की-फुल्की कॉमेडी के जरिए खूब जंचते थे और दर्शकों के दिलों पर हमेशा राज करते थे।

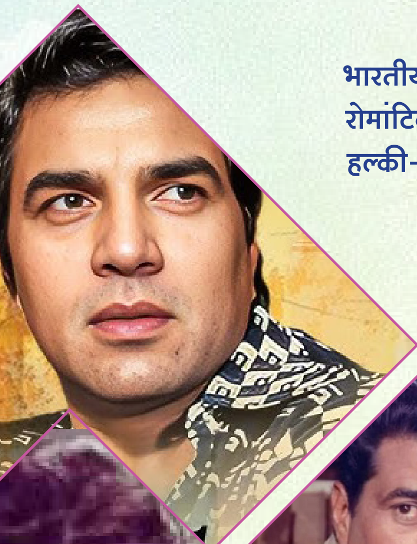

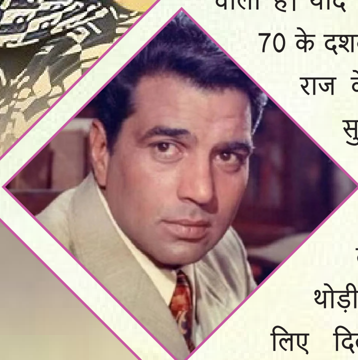

हम सभी सिने-प्रेमियों के चहेते धर्मेंद्र के चले जाने का समाचार स्तब्ध कर देने वाली है। यदि हम 60 और 70 के दशक के एकछत्र राज के हिसाब से सुपर स्टारों के नाम लेना चाहें तो थोड़ी-थोड़ी अवधि के लिए दिलीप कुमार, शम्मी कपूर, राजेंद्र कुमार, जीतेंद्र, राजेश खन्ना और फिर लम्बी अवधि के लिए अमिताभ बच्चन के नाम सामने आएंगे, लेकिन एक कलाकार जिसने हर दौर में इस सितारों के सिंहासन को चुनौती दी है, वह धर्मेंद्र ही है। 60 के दशक की शुरुआत में 'दिल भी तेरा हम भी तेरे'(1960) से जब धर्मेंद्र ने फिल्मों में पदार्पण किया था, तब तक नायक के रूप में कभी किसी 'ही-मैन' की कल्पना नहीं की जाती थी। कदाचित् इसीलिए 'शोला और शबनम'(1961), 'आई मिलन की बेला'(1964),'आकाशदीप'(1965) जैसी जाने कितनी शुरुआती फिल्मों वे दर्शकों के समक्ष काले रंग की लिपस्टिक लगाए, चिकने-चुपड़े अवतार में नमूदार हुए।

वह तो ओ पी रल्हन का कमाल था, जिन्होंने 'फूल और पत्थर'(1966) के पोस्टरों पर उन्हें खुली छाती में पेशकर जनता के सामने ऐलान किया कि हीरो वही, जिसमें मर्दानगी हो। नायक के नाम पर चिकने-चुपड़े बाबू छाप पात्रों को देख-देखकर अघा चुकी जनता नायक के इस नए अवतार के स्वागत के लिए टूट पड़ी और दो सप्ताह में ही धर्मेंद्र हर मजदूर, मेहनतकश और गरीब मानव के हीरो बन गए।

शशांक दुबे

दूसरे नायकों की तरह धर्मेंद्र में न तो रोमांटिक भूमिकाओं को पूरी संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करने की कला थी, न ही गीत-संगीत पर झूमने के लिए पर्याप्त सेंस ऑफ रिद्म, लेकिन अच्छे व्यक्तित्व, मोहक मुस्कान, आंखों से टपकती शराफत और संवाद बोलने के ठेठ देसी अंदाज ने उन्हें जल्द ही लोक-लाड़ला बना दिया।

'फूल और पत्थर' के बाद 'शिकार' (1967), 'आंखें' (1968), 'आया सावन झूम के'(1969), जैसी फिल्मों में अपने रफ-टफ किरदारों से उन्होंने अपनी जगह मजबूत कर ली। वर्ष 1971 में काका की छः फ़िल्में सुपर हिट हुई थीं और बॉक्स ऑफिस पर उन्हीं की तूती बोल रही थी ऐसे में 'जीवन मृत्यु' 'मेरा गांव मेरा देश', 'रखवाला' और 'नया जमाना' जैसी सफल फिल्में देकर उन्होंने दृश्यपटल से स्वयं को ओझल न होने दिया। धर्मेंद्र-हेमा ने साथ-साथ लगभग 20 फिल्मों में काम किया और लगभग सभी हिट रहीं। धर्मेंद्र ने न तो कभी अपनी फिल्मों के प्रचार के लिए उलजलूल हथकंडे अपनाए, न ही मार्केट में बने रहने के लिए अफवाहों का सहारा लिया। जनता उन्हें दिल से पसंद करती थी। यही कारण है कि 'मेरा गांव मेरा देश' के क्लाइमेक्स में जब वे दुर्दांत दस्यु गब्बर सिंह (विनोद खन्ना) की बेल्ट से पिटाई करते हैं तो उनके हर वार के साथ दर्शक भी समवेत स्वर में 'एक-दो-तीन-चार' की गिनती करते थे। इसी प्रकार 'प्रतिज्ञा' के 'मैं जट यमला पगला दीवाना' गीत में जैसे ही वे 'रेशमी दुपट्टा फेंका पींग के हुलारे में' पंक्तियों में सर पर दुपट्टा ओढ़कर कमर मटकाते थे, सारा हॉल सीटियों और तालियों से गूंज उठता था।

दो साल पहले 'रॉकी और रानी की प्रेम कहानी' फिल्म से तत्कालीन सिनेमा में अपनी उपस्थिति दर्ज करने वाले धर्मेंद्र निधन से कुछ दिन पहले तक सक्रिय रहे। कभी टीवी पर, कभी फार्म हाउस पर खेती करते, कभी सार्वजनिक कार्यक्रमों में, तो कभी अन्य सितारों के निजी कार्यक्रमों में वे अधिकतर दिखलाई देते रहे। जब भी हिंदी सिनेमा के अलग-अलग दौर की बात चलेगी, धर्मेंद्र हर बार याद किए जाते रहेंगे अपनी उसी मुस्कान के साथ, जिसके जरिए उन्होंने करोड़ों दर्शकों का दिल जीता था। ■■■

दर्द

फिल्म अभिनेता धर्मेंद्र के मन के एक कोने में हमेशा यह दर्द रहा कि कई हिट फिल्म देने के बाद भी उन्हें किसी तरह का सम्मान 37 वर्षों तक नहीं मिला। वो लम्बे समय तक पुरस्कार की प्रतीक्षा करते रहे और यहां तक कि सम्मान पाने के लिए वो प्रतिवर्ष सूट भी सिलवाते थे, लेकिन वर्ष बदलता रहा सम्मान की आस में।

वर्षों बीते आस में...

प्रसिद्ध शायर निदा फाजली साहेब का एक शेर है-

'कभी किसी को मुकम्मल जहां नहीं मिलता,
कहीं ज़मी तो कहीं आसमां नहीं मिलता'

कुछ ऐसा ही हुआ भारतीय सिनेमा के सर्वश्रेष्ठ सितारे धर्मेंद्र के साथ, उन्हें अपने अभिनय के लिए दर्शकों का प्यार तो मिला, लेकिन वो प्यार कभी पुरस्कार में नहीं बदल पाया। ये दर्द उनके मन में हमेशा रहा, इसलिए जब उन्हें अपने काम के लिए फिल्मफेयर द्वारा लाइफ टाइम अचीवमेंट सम्मान दिया गया तो उन्होंने भरे मंच से अपने इस दुख को सबके साथ साझा भी किया। उन्होंने अपने आदर्श अभिनेता दिलीप कुमार से ये सम्मान लेते हुए कहा कि उन्हें 37 बरस लग गए ये ट्रॉफी अपने हाथ में लेने के लिए। वो प्रत्येक वर्ष एक सूट सिलाते थे, इस आशा में कि उन्हें बुलावा आएगा, बुलावा नहीं आता और वो निराश हो जाते थे, फिर उन्होंने सूट सिलाने ही बंद कर दिए। सोचा यदि बुलाएंगे तो टी-शर्ट पहन कर ही चले जाएंगे। आज 37 वर्ष बाद उन्हें बुलावा आया है। ये कहते हुए उनकी आंखों की नमी उनके दर्द को प्रकट कर रही थी।

ऐसा नहीं है कि धर्मेंद्र को उनके अभिनय के लिए कभी नामांकित नहीं किया गया, लेकिन संयोग कुछ ऐसा बना कि वो पुरस्कार प्राप्त नहीं कर पाएं। सबसे पहले उन्हें 1965 में फिल्म 'आई मिलन की बेला' के लिए सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता के लिए नामांकन मिला, लेकिन उस वर्ष ये सम्मान मिला फिल्म 'शहर और सपना' के लिए नाना पलसीकर को। इसके बाद 1967 में आई उनकी सुपर हिट फिल्म 'फूल और पत्थर' जिसने उन्हें 'ही मैन' का खिताब भी दिया। इसके लिए उन्हें बेस्ट एक्टर के लिए नामांकित किया गया, लेकिन इस वर्ष का पुरस्कार मिला देवानंद को फिल्म 'गाइड' के लिए। 1972 में उन्हें 'मेरा गांव मेरा देश' के लिए एक बार फिर बेस्ट एक्टर का नामांकन मिला, लेकिन पुरस्कार मिला फिल्म 'आनंद' के लिए राजेश खन्ना को। 1975 में 'रेशम की डोरी' में उनके अभिनय के लिए एक बार फिर उन्हें बेस्ट एक्टर के लिए नामांकन मिला, लेकिन पुरस्कार मिला 'अविष्कार' के लिए राजेश खन्ना को। 1984 में उन्हें फिल्म 'नौकर बीवी का' के लिए सर्वश्रेष्ठ हास्य कलाकार के रूप में नामांकन मिला, लेकिन पुरस्कार इस बार उत्पल दत्त साहेब को 'रंग बिरंगी' के लिए दिया गया।

अतुल गंगवार

1997 में धर्मेंद्र को 'लाइफ टाइम अचीवमेंट सम्मान' फिल्मफेयर के द्वारा उन्हें दिया गया। धर्मेंद्र के चाहने वालों को उनके सक्रिय अभिनय के लिए सम्मान ना मिलना हमेशा खलेगा। 300 से अधिक फिल्मों में अपने अभिनय का जादू बिखेरने वाले धर्मेंद्र को 'फूल और पत्थर', 'हकीकत', 'काजल', 'ममता', 'देवर', 'अनुपमा', 'सत्यकाम', 'चुपके चुपके', 'शोले' आदि जैसी अनगिनत फिल्मों में सर्वश्रेष्ठ अभिनय के लिए सम्मान पहले ही मिल जाना चाहिए था, लेकिन उन्हें ये पुरस्कार समय पर नहीं मिला। उन्हें मिला तो अपने असंख्य चाहने वालों का प्यार।

आज धर्मेंद्र हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनकी फिल्में आज भी उपलब्ध हैं जो आने वाली पीढ़ियों को बताएंगी कि धर्मेंद्र सिंह देओल कौन थे। इससे बड़ी बात किसी कलाकार के लिए क्या हो सकती है? ▪▪▪

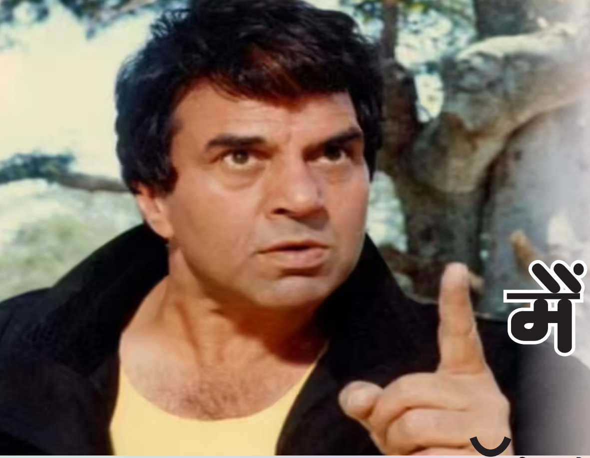

कुत्ते, कमीने, मैं तेरा खून पी जाऊंगा...

संवाद

धर्मेंद्र ने दमदार अदाकारी, प्रभावशाली व्यक्तित्व और संवाद डिलीवरी से हिंदी सिनेमा में अपनी एक अलग पहचान बनाई। फिल्मों में उनके कई ऐसे संवाद हैं जो आज भी दर्शकों के बीच उतने ही लोकप्रिय हैं जितने वे रिलीज के समय थे।

बॉलीवुड के 'ही-मैन' कहे जाने वाले अभिनेता धर्मेंद्र का 89 वर्ष की आयु में 24 नवम्बर 2025 को निधन हो गया। उनके निधन से फिल्म जगत को एक अपूर्णनीय क्षति हुई है। उनका अभिनय, उनकी संवाद डिलीवरी, हास्य अभिनय, सादगी और शालीनता से ओत-प्रोत व्यक्तित्व आज भी दर्शकों को लुभाते हैं। कभी वीरू की शरारतें, कभी शराबी का दर्द, तो कभी एक्शन हीरो की गर्जना- धर्मेंद्र के संवादों में एक अलग ही जादू था।

धर्मेंद्र के डायलॉग आज भी दर्शकों के दिलों में बसते हैं और पीढ़ी दर पीढ़ी आज भी लोकप्रिय हैं। धर्मेंद्र का लोकप्रिय डायलॉग 'बसंती, इन कुत्तों के सामने मत नाचना' फिल्म शोले (1975) का हिस्सा है। इसमें वे अपने किरदार वीरू के रूप में बसंती से यह बात कहते हैं। इस यादगार लाइन ने धर्मेंद्र के किरदार वीरू को अमर कर दिया।

फिल्म यादों की बारात (1973) में धर्मेंद्र का डायलॉग 'कुत्ते, कमीने, मैं तेरा खून पी जाऊंगा' बेहद लोकप्रिय हुआ। यह डायलॉग आज भी बच्चे-बच्चे की जुबान पर रटा हुआ है। यह धर्मेंद्र के सबसे फेमस डायलॉग्स में से एक है।

शोले का एक और मजेदार डायलॉग तब आता है जब वीरू नशे में पानी की टंकी पर चढ़ जाता है और गांव वालों के लिए नाटक जैसा वातावरण बना देता है। वह कहता है, 'गांव वालों, तुमको मेरा आखरी सलाम गुडबाय', इस स्टोरी में इमोशन है, ड्रामा है, ट्रेजेडी है जो दर्शकों को आज भी याद है। धर्मेंद्र का यह ड्रंक कॉमिक सीन आज भी बॉलीवुड का सबसे फेवरेट है।

फिल्म लाइफ इन ए मेट्रो (2007) में धर्मेंद्र ने अमोल के किरदार में एक शांत और भावुक डायलॉग कहा था- 'दिल के मामले में हमेशा दिल की सुननी चाहिए'। यह लाइन रिश्तों और भावनाओं के महत्व को दिखाती है।

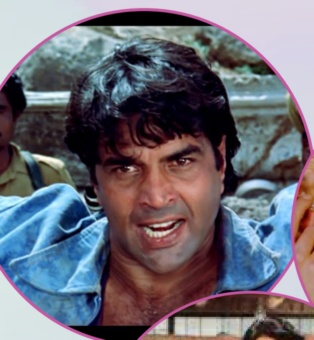

फिल्म लोहा में धर्मेंद्र ने इंस्पेक्टर अमर का किरदार निभाया था। उनका दमदार डायलॉग 'तुम्हारी ये गोली लोहे के शरीर के पार नहीं जा सकती' यह उनके मजबूत और एक्शन भरे अंदाज को दिखाता है। धर्मेंद्र के ये डायलॉग उस दौर की फिल्मों की पहचान बन गए और आज भी उनकी गूंज अनुभव की जा सकती है और 'ओए, इलाका कुत्तों का होता है, शेर का नहीं' (यमला पगला दीवाना)। अन्य प्रसिद्ध डायलॉग्स में 'कभी जमीन से बात की है ठाकुर? ये जमीन हमारी मां है' (गुलामी) शामिल हैं।

'दिल भी कोई चीज है जो हर किसी को दे दूं' (अनुपमा) फिल्म। यह डायलॉग काफी इमोशनल है, जो धर्मेंद्र के एक ही-मैन होने के साथ-साथ यह भी दिखाता है कि वे एक कोमल हृदय के व्यक्ति थे, जिनसे सभी प्यार करते थे।

'तुम मुस्कुराती रहो, यही मेरी जीत है' (दिल्लगी)। यह फिल्म धर्मेंद्र और हेमा मालिनी की है, जो उनके विवाह से पहले रिलीज हुई थी। यह एक रोमांटिक कॉमेडी फिल्म थी जो 1978 में रिलीज हुई थी।

■■■

पितांबरी®
होमकेअर डिवीजन
चिकनाहट मिटाए,
बर्तन चमकाए !
Antibacterial
PITAMBARI®
DISHWASH BAR
With Lemongrass
Kam Gale, Chale Zyada!
with lemongrass
ANTIBACTERIAL
• नॉनस्टिक, स्टील के बर्तन और क्रॉकरी को साफ करता है।
• चिकनाहट और तेल के जिद्दी दाग निकालता है।
Pitambari Products Pvt. Ltd.: Maharashtra: 8291853804, North: 7011012599,
South: 6366932555, East: 7752023380, 9867102999, CRM: 022 - 67035564 / 5699.
Toll Free: 18001031299. CIN: U52291MH1989PTC051314.

सम्पूर्ण हुआ श्रीरामजन्मभूमि मुक्ति यज्ञ

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने विगत 25 नवम्बर को अयोध्या में श्रीरामजन्मभूमि मंदिर के शिखर पर धर्म ध्वजा फहराई। विगत 500 वर्षों के लम्बे संघर्ष के बाद धर्म ध्वज की स्थापना कर रामजन्मभूमि मुक्ति यज्ञ की पूर्णता की घोषणा प्रधान मंत्री ने की।

मृत्युंजय दीक्षित

अयोध्या में जिस रामजन्मभूमि की मुक्ति के लिए भारत भूमि के हिंदुओं ने विगत 500 वर्षो के लम्बे कालखंड में अथक संघर्ष किया, असंख्य जीवन बलिदान हुए, आज उस पुण्य श्रीरामजन्मभूमि पर बने गगनचुम्बी राम मंदिर के भव्य शिखर पर भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने धर्म ध्वज की स्थापना कर रामजन्मभूमि मुक्ति यज्ञ की पूर्णता की घोषणा की। रामजन्मभूमि मुक्ति के लिए संघर्ष तो स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात 1949 में ही प्रारम्भ हो गया था, किंतु भगवान श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम थे, अतः समस्त हिंदू समाज ने उनकी मर्यादा के अनुरूप ही संवैधानिक व सामाजिक मर्यादाओं का पालन करते हुए यह अद्भुत विजयश्री प्राप्त की। धर्म ध्वज से सुशोभित अयोध्या का दिव्य व भव्य राम मंदिर केवल एक आस्था का केंद्र नहीं अपितु हिंदू समाज के संघर्ष, कारसेवकों के बलिदान, न्याय और सांस्कृतिक पुनर्जारण की वह अदभुत कथा है जिसने लगभग पांच दशकों तक देश की राजनीति, समाज और जनभावनाओं को प्रभावित किया है। रामजन्मभूमि आंदोलन का विस्तार धीरे-धीरे जनभावना में ऐसा समा गया कि यह धार्मिक आंदोलन न रहकर सम्पूर्ण समाज की सांस्कृतिक अस्मिता का प्रतीक बन गया। दिव्य व भव्य राम मंदिर के शिखर पर ध्वजारोहण की इस यात्रा में संघर्ष, आंदोलन, न्यायिक लड़ाई और करोड़ों भक्तों का धैर्य वंदनीय है। यह यात्रा न केवल आंदोलन का वर्णन करती है अपितु देश की सांस्कृतिक स्मृति में स्थायी स्थान भी बनाती है। राम मंदिर निर्माण के लिए कई पीढ़ियों ने संघर्ष किया। संकल्प से सिद्धि की इस यात्रा में प्रत्येक सनातनी ने योगदान दिया है। संतो, सामाजिक संगठनों और रामभक्तों की सहभागिता ने इसे राष्ट्रव्यापी स्वरूप दिया। जन्मभूमि का संघर्ष अंततः न्यायालय की प्रक्रिया से गुजरा जिसमें लम्बी सुनवाई, अभूतपूर्व धारा प्रवाह तर्क और गहन ऐतिहासिक, पुरातात्विक विश्लेषण के बाद यह समाधान निकला।

राम मंदिर आंदोलन में एक ऐसा अवसर भी आया, जब हिंदू द्रोही उपहास करते हुए कहते थे, राम लला हम आएंगे मंदिर वहीं बनाएंगे, किंतु तारीख नहीं बताएंगे। आज अयोध्या में दिव्य व भव्य राम मंदिर का संकल्प सिद्ध हो चुका है और उसके शिखर पर केसरिया ध्वज का आरोहण हो चुका है। राम मंदिर निर्माण की पूर्णता भारत की सांस्कृतिक चेतना का उद्घोष करते हुए इन रामद्रोहियों को उत्तर भी दे रही है। राम मंदिर की यह यात्रा बताती है कि आस्था से बड़ा कोई बल नहीं, सत्य से बड़ी कोई परम्परा नहीं और धर्म से दृढ़ कोई संस्कृति नहीं। मंदिर निर्माण से लेकर शिखर ध्वजारोहण सभी ने मिलकर सनातन धर्म की निरंतरता को फिर

स्थापित किया है। राम मंदिर के शिखर पर ध्वजारोहण से अशोक सिंघल, महंत रामचंद्र परमहंस दास महाराज, महंत अवैद्यनाथ, विष्णु हरि डालमिया, अनेकानेक संत वृंद, कोठारी बंधु समेत लाखों कारसेवक, गृहस्थ नर-नारी, अबाल, वृद्ध, विद्यार्थी जिन्होंने अपना सर्वस्व अर्पित किया, आज उन सभी के नेत्रों में प्रेमाश्रु हैं।

9 नवम्बर 2019 को राम मंदिर पर सर्वोच्च न्यायालय का ऐतिहासिक निर्णय आ जाने के बाद भूमिपूजन से लेकर गर्भगृह, मंडप शिखर और निर्माण तक यह प्रक्रिया केवल स्थापत्य निर्माण नहीं वरन सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति के पुनर्लेखन का उत्सव रहा। राम मंदिर के शिखर पर ध्वजारोहण के समय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन जी भागवत व उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपने-अपने सम्बोधनों से राम मंदिर आंदोलन की समस्त कथा का जो संक्षिप्त वर्णन किया, वह भावुक और हृदय को गर्व से भर देने वाला था। प्रधान मंत्री मोदी ने कहा कि सदियों के घाव भर रहे हैं, वेदना विराम पा रही है, संकल्प सिद्धि को प्राप्त हो रहा है। आज उस यज्ञ की पूर्णाहुति है जिसकी अग्नि 500 वर्ष तक प्रज्ज्वलित रही। अयोध्या नगरी भारत की सांस्कृतिक चेतना के एक और उत्कर्ष बिंदु की साक्षी बनी है। सम्पूर्ण भारत, सम्पूर्ण विश्व राममय है। यह क्षण युगांतरकारी है। राम मंदिर पर ध्वजारोहण के बाद अब हर रामभक्त के हृदय में असाधारण संतोष, कृतज्ञता और अपार अलौकिक आनंद है। आज भगवान श्रीराम के गर्भगृह की अनंत ऊर्जा, श्रीराम परिवार का दिव्य प्रताप इस धर्म ध्वजा के रूप में दिव्यतम, भव्यतम मंदिर में प्रतिपाष्ठित हुआ। यह पवित्र ध्वज प्रमाण होगा कि असत्य पर अंततः सत्य की विजय होती है। स्मरणीय है कि राम मंदिर आंदोलन की पूर्णता में प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी व उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री योगी आदित्यनाथ की भी महती भूमिका रही है। नरेंद्र मोदी, पूर्व उप प्रधान मंत्री व भाजपा नेता लालकृष्ण आडवाणी की रामरथ यात्रा के प्रबंधक रहे थे, राम जन्मभूमि पर न्यायालय का निर्णय आने के पश्चात अयोध्या में राम मंदिर के भूमि पूजन से लेकर मंदिर के शिखर पर ध्वजारोहण तक सभी कार्यक्रमों में उनकी उपस्थिति का ऐतिहासिक महत्व है। ध्वजारोहण के समय उनका भावुक होना अत्यंत स्वाभविक ही है। राम मंदिर के शिखर पर ध्वजारोहण एक महायज्ञ की पूर्णता मात्र नहीं अपितु नए युग का शुभारम्भ है।

मुख्य मंत्री योगी आदित्यनाथ ने ध्वजारोहण समारोह को उन पूज्य संतों, योद्धाओं व रामभक्तों की अखंड साधना और संघर्ष को समर्पित किया, जिन्होंने मंदिर आंदोलन के लिए जीवन समर्पित किया। श्रीरामजन्मभूमि मंदिर पर फहराता केसरिया ध्वज धर्म, मर्यादा, सत्य, न्याय व राष्ट्रधर्म का भी प्रतीक है।

■■■

स्वयं के लिए और अपने परिजनों के लिए ग्रंथ का पंजीयन करें

इस ग्रंथ में आप पढ़ेंगे

- संघ में हो रहे अनगिनत सेवा कार्यों का परिणाम क्या है?
- डॉ. हेडगेवार जी से लेकर डॉ. मोहन भागवत जी तक के सभी सरसंघचालकों का दिशादर्शन...
- राजनीति को केंद्र में न रखकर राष्ट्रीयत्व को क्यों केंद्र में रखा?
- भारत के सम्मुख चुनौतियां और संघ कार्य का प्रभाव
- संघ विचारधारा और परिवर्तन

जैसे विविध मौलिक विषय

ग्रंथ का मूल्य ₹700/-

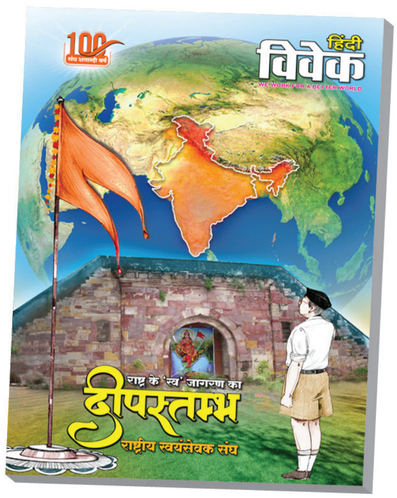

ईमेल - hindivivekvargani@gmail.com

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, **Branch -** Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

सम्पर्क प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483
भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

घुसपैठ

नहीं मिल रही सुरक्षित ठौर...

विप्लव विकास

इस बदलते भारत की विशेषता यह है कि वह अधिक जागरूक, अधिक सुरक्षा केंद्रित, अधिक संगठित, डेटा संचालित और सम्प्रभुता-सचेत है। इसलिए वह समय समाप्त हो चुका है जब बांग्लादेशी-रोहिंग्या-पाकिस्तानी घुसपैठिए यहां अवैध रूप से बस जाते थे। राजनीतिक संरक्षण की दीवारें गिर चुकी हैं, जालसाजी के रास्ते बंद हो चुके हैं, समाज सतर्क हो चुका है और सिस्टम पहले से कहीं अधिक कठोर हो गया है।

भारत आज एक निर्णायक मोड़ पर खड़ा है, जहां राष्ट्रीय सुरक्षा, सीमाई सम्प्रभुता और जनसांख्यिकीय संतुलन जैसे मुद्दे किसी राजनीतिक विमर्श भर तक सीमित नहीं रह गए हैं बल्कि वे आम नागरिक की चेतना का हिस्सा बन चुके हैं। दशकों से बांग्लादेश और पाकिस्तान से आने वाले अवैध घुसपैठिए भारत के कई राज्यों में गहरी पैठ बनाते रहे। फर्जी कागजातों, ढीले तंत्र, राजनीतिक संरक्षण और स्थानीय नेटवर्कों की सहायता से वे न केवल भीड़ में छिपे रहते थे बल्कि कई जगहों पर समानांतर सामाजिक और आर्थिक ढांचे भी खड़े कर लेते थे, परंतु 2025 के बाद स्थितियां तेजी से बदली हैं। आज जो समूह एक समय स्थायी रूप से बस जाने का विश्वास रखते थे, वे भाग रहे हैं, लोकेशन बदल रहे हैं और लगातार पहचान छिपाने का प्रयास कर रहे हैं। यह बदलाव आकस्मिक नहीं बल्कि भारत के बदलते चरित्र और सख्त होती राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं का परिणाम है।

अवैध विदेशी जनसंख्या का नेटवर्क वर्षों तक केवल मजदूरी तक सीमित नहीं था बल्कि वह एक बहुआयामी तंत्र का हिस्सा बन चुका था। फर्जी आधार, वोटर कार्ड, राशन कार्ड बनाने वाले गिरोह उनके लिए सुरक्षा चक्र तैयार करते थे। कई शहरों, जैसे कोलकाता, गुवाहाटी, मुर्शिदाबाद, हैदराबाद, दिल्ली और बंगलुरु में तो यह तंत्र इतना मजबूत था कि वह स्थानीय प्रशासन को भी चुनौती देने लगा था, परंतु जैसे-जैसे डिजिटल गवर्नेंस गहरा हुआ, पहचान आधारित सत्यापन सख्त हुआ और राज्यों के बीच डेटा समन्वय बढ़ा, उसी अनुपात में उनकी बदली हुई पहचानें उजागर होने लगीं। आज बायोमेट्रिक रिकॉर्ड, अख-आधारित मिलान और राष्ट्रीय डेटा-इंटीग्रेशन के कारण पहचान छिपाना लगभग असम्भव हो गया है। इस बदलाव को और अधिक निर्णायक बनाया राजनीतिक संरक्षण के ढहने ने। लम्बे समय तक कई क्षेत्रों में अवैध विदेशी जनसंख्या को वोट बैंक के रूप में प्रयोग किया गया। उनके बसावट क्षेत्रों को जानबूझकर अनदेखा किया जाता था ताकि वे राजनीतिक रूप से उपयोगी बने रहें, परंतु राष्ट्रीय सुरक्षा विमर्श के उभार, नागरिक समाज की मुखरता और सुरक्षा एजेंसियों के बढ़ते हस्तक्षेप ने इस संरक्षण की दीवार को ढहा दिया। अब कोई राजनीतिक दल खुले तौर पर इस वर्ग का पक्ष लेने की स्थिति में नहीं है क्योंकि देश में राष्ट्रहित की चेतना अधिक प्रबल हो चुकी है और जनता तथ्यों के प्रति पहले से कहीं अधिक सतर्क है।

स्थानीय समाज की भूमिका इस परिवर्तन में अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। वर्षों तक यह वर्ग आम नागरिकों की दृष्टि से बचकर मजदूरी कार्यों में लिप्त

रहा, लेकिन जैसे-जैसे अपराध, जमीन कब्जा, तस्करी नेटवर्क और धार्मिक कट्टरता की घटनाओं से जुड़ी कड़ियां सामने आईं, समाज ने चुप्पी तोड़नी शुरू की। आज स्थिति यह है कि बस्तियों में बाहरी लोगों की उपस्थिति तुरंत नोटिस की जाती है, किराए के मकानों में जांच बढ़ गई है और नागरिक समूह प्रशासन को सीधे सूचना देने में संकोच नहीं करते। समाज का यह जागरण इन तत्वों के लिए किसी भी शहर या गांव को स्थायी ठिकाना बनने से रोक रहा है।

रोजगार के स्तर पर भी उनका सुरक्षित दायरा तेजी से सिमटा है। एक समय वे निर्माण, ठेले, घरेलू काम, खेतिहर मजदूरी और छोटे कारखानों में बिना पहचान के आसानी से काम पा लेते थे, लेकिन अब अधिकांश फैक्ट्रियां और श्रमिक केंद्र पहचान-पत्र अनिवार्य कर चुके हैं। मजदूरों का डेटा रिकॉर्ड हो रहा है, नकद भुगतान वाली नौकरियां कम हो गई हैं और नियोक्ता विदेशी पहचान का जोखिम उठाने को तैयार नहीं। आर्थिक असुरक्षा बढ़ते ही उनका टिकाव तत्काल टूट जाता है और वे लगातार नए स्थान खोजने पर मजबूर हो जाते हैं।

उधर बड़े शहर, दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, बंगलुरु अब निगरानी के सबसे सख्त केंद्र बन चुके हैं। कैमरा नेटवर्क, पुलिस तकनीक, डिजिटल किरायेदारी रिकॉर्ड और नागरिक सतर्कता ने इन शहरों में छिपना लगभग असम्भव बना दिया है। इसलिए वे छोटे राज्यों, सीमांत जिलों, उत्तर-पूर्व, राजस्थान, हरियाणा या दक्षिण भारत के ग्रामीण क्षेत्रों की ओर पलायन कर रहे हैं, जहां उन्हें सिस्टम अपेक्षाकृत ढीला लगता था, पर अब उन क्षेत्रों में भी जागरूकता बढ़ चुकी है और स्थानीय प्रशासन तथा समाज किसी भी संदिग्ध गतिविधि को तुरंत पकड़ लेता है।

इन सबके बीच सबसे बड़ा दबाव उनकी सामाजिक पहचान से पैदा हुआ है। अवैध विदेशी जनसंख्या की बोली, उच्चारण, पहनावा, नाम और व्यवहार पैटर्न उन्हें तुरंत अलग कर देता है। पहले इस भिन्नता को सहजता या अनदेखी में छोड़ दिया जाता था, लेकिन अब वही पहचान स्थानीय सतर्कता का सबसे बड़ा आधार बन चुकी है। कई मामलों में प्रशासन तक सूचना सीधे नागरिकों के माध्यम से पहुंचती है और इस सामाजिक पहचान ने उनके लिए लगभग हर दिशा में खतरे की घंटी बजा दी है। भारत यह संदेश दे रहा है कि जो यहां का नागरिक है, वह सम्मान और अधिकार का भागीदार है, परंतु जो घुसपैठिया है उसके लिए भारत में कोई स्थान नहीं। यह संदेश न केवल सीमा तक सीमित है बल्कि गांवों, कस्बों, शहरों और राज्यों तक फैल चुका है। ■■■

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समझने के लिए मौलिक एवं संग्रहणीय पुस्तक

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

पद्मश्री रमेश पतंगे लिखित
'हिंदी विवेक' द्वारा प्रकाशित

हम संघ में क्यों हैं...

संघ विचारों की मूल प्रेरणा, संघकार्य को समझने की प्रक्रिया और इन सभी से संघ स्वयंसेवकों को अनायास मिलनेवाले राष्ट्रबोध और कर्तव्यबोध का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

पंजीयन करें

पुस्तक का मूल्य ₹250/-

Draft or Cheque should be drawn in the name of **HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK**

Bank Details : State Bank of India, **Branch -** Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483, भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

RERA No:
P-SWR-24-4573
Emerald
GATEWAY
EMBARK ON EXCEPTIONAL LIVING
Build your Legacy With
GATEWAY TODAY
PREMIUM RESIDENTIAL PLOTS
PLOT SIZE : 1000-2000 SQFT
SULLAKHEDI, AB BYPASS, INDORE, MP
+91-76106-76106
Emerald
GATEWAY
Water Bodies
Cricket Pitch
Kids Play Area
Basket Ball Court
Sitout Area
Multipurpose Lawn
SCAN TO SEE

परम्परा, परिवर्तन और भविष्य का राष्ट्रीय संकल्प

भारत में चार नए श्रम कानून लागू हुए हैं, जो केवल श्रमिक नीति का पुनर्गठन नहीं बल्कि नए भारत की वह दृष्टि है, जिससे श्रम को सम्मान, उद्योग को स्वतंत्रता और राष्ट्र को विकास की नई दिशा प्राप्त होगी। ये 21वीं सदी के 'विश्वगुरु भारत' के संकल्प को साकार करने में निर्णायक भूमिका निभाएंगे।

भारतीय सभ्यता में श्रम, केवल जीविकोपार्जन का साधन नहीं बल्कि एक आध्यात्मिक अनुशासन के रूप में देखा गया है। हमारे शास्त्रों में 'कर्मण्येवाधिकारस्ते' का संदेश यही दर्शाता है कि श्रम मानव जीवन की धुरी है और समाज का सामूहिक आधार भी। विडम्बना यह रही कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में श्रम कानूनों की रचना भले ही श्रमिक संरक्षण को लक्ष्य बनाकर की गई, परंतु समय के साथ वे जटिल, असंगत और उद्योगों तथा श्रमिकों दोनों के लिए भारी बोझ बनते गए। औद्योगिक युग में बनी अनेक नीतियां डिजिटल युग की आवश्यकताओं के अनुकूल नहीं थीं। परिणामस्वरूप भारत में रोजगार सृजन धीमा पड़ा और श्रमिकों का एक बड़ा वर्ग असंगठित क्षेत्र के अंधकार में ही रह गया।

इसी लम्बे ऐतिहासिक संदर्भ को ध्यान में रखते हुए केंद्र सरकार ने श्रम क्षेत्र में व्यापक सुधार का साहसिक निर्णय लेते हुए 29 पुराने कानूनों को समेकित कर चार नई श्रम संहिताएं लागू कीं। वेतन संहिता, औद्योगिक सम्बंध संहिता, सामाजिक सुरक्षा संहिता और व्यवसायिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य संहिता। यह परिवर्तन केवल कानूनी संशोधन भर नहीं है बल्कि राष्ट्रीय आर्थिक पुनर्निर्माण का वह चरण है जिसमें भारतीय परम्परा, आधुनिकता और उद्यम की शक्ति एक साथ दिखाई देती है।

नई संहिताओं की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे एकरूपता, सरलता और पारदर्शिता पर आधारित हैं। दशकों से उद्योगों और श्रमिकों को उलझाने वाले जटिल कानूनों की जगह अब एक ऐसे ढांचे की स्थापना की जा रही है जिसमें अधिकार और कर्तव्य स्पष्ट हों, नियम समझने में सरल हों और विवादों के निपटान की प्रक्रिया सहज हो। यह सुधार भारत को उन विकसित देशों की कतार में खड़ा करता है जहां श्रम कानूनों की स्पष्टता निवेश को आकर्षित करती है।

प्रो.अलकेश चतुर्वेदी

वेतन संहिता न्यूनतम वेतन और समान वेतन की अवधारणा को पूरे भारत में एक समान लागू करती है। स्वतंत्रता के बाद पहली बार देश के प्रत्येक श्रमिक- चाहे वह संगठित हो या असंगठित- को यह सुनिश्चित किया गया है कि उसकी आय मानवीय गरिमा के अनुरूप हो। इससे भारत की विशाल श्रमशक्ति को आर्थिक स्थिरता और सम्मान दोनों प्राप्त होंगे। आधुनिक वेतन संरचना में मूल वेतन को अधिक महत्व देकर इस संहिता ने वेतन को पारदर्शी बनाया है, जिससे कर्मचारियों को भविष्य निधि, ग्रेच्युटी और अन्य लाभ स्वतः ही सुनिश्चित हो जाएंगे।

औद्योगिक सम्बंध संहिता का उद्देश्य श्रमिक-नियोक्ता सम्बंधों में संतुलन स्थापित करना है। पिछले दशकों में छोटी-सी श्रम विवाद की चिंगारी से बड़े औद्योगिक विवाद खड़े होते रहे, जिससे आर्थिक गतिविधियां प्रभावित होती थीं। नई संहिता इस व्यवस्था को अधिक तर्कसंगत बनाती है। फिक्स्ड-टर्म रोजगार जैसे प्रावधान आधुनिक उद्योगों के लिए आवश्यक लचीलापन प्रदान करते हैं, वहीं श्रमिक को स्थायी कर्मचारियों के समान लाभ भी सुनिश्चित करते हैं।

यह भारत के युवाओं को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाता है और उद्योगों को स्थिरता प्रदान करता है।

सामाजिक सुरक्षा संहिता का विस्तार देखकर प्रतीत होता है कि भारत पहली बार सभी श्रमिकों- चाहे वह कारखाने का मजदूर हो, खेतिहर श्रमिक, घरेलू कामगार, असंगठित श्रमिक या डिजिटल-प्लेटफॉर्म पर काम करने वाला युवा- सभी के लिए सुरक्षा के एक व्यापक छाते का निर्माण कर रहा है। यह वही दृष्टि है जिसने प्राचीन भारत में 'श्रेणी-संघ सामाजिक सुरक्षा' को जन्म दिया था। आज का ई-श्रम कार्ड उसी परम्परा का आधुनिक रूप है, जिससे करोड़ों असंगठित श्रमिक भविष्य में पेंशन, बीमा, दुर्घटना सहायता और मातृत्व लाभ जैसी सुविधाओं से जुड़ सकेंगे।

व्यवसायिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य संहिता कार्यस्थलों को सुरक्षित, स्वच्छ और मानव-केंद्रित बनाने का प्रयास करती है। औद्योगिक क्रांतियों के मध्यकाल में दुनिया ने देखा कि असुरक्षित कार्यस्थल कैसे विनाशकारी परिणाम पैदा करते हैं। भारत इन सबको ध्यान में रखते हुए आधुनिक सुरक्षा मानकों को अपनाता है। महिलाओं को सभी शिफ्ट में काम की अनुमति, परंतु सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करने की अनिवार्यता- यह प्रावधान नारी-सशक्तिकरण और आर्थिक स्वतंत्रता दोनों को एक दिशा देता है। प्रवासी श्रमिकों की सुरक्षा और व्यवस्थाओं पर दिया गया विशेष महत्व भी ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि पहली बार उनके लिए व्यापक डेटा, सुविधाएं और लाभ सुनिश्चित किए गए हैं।

इन चारों संहिताओं का सामूहिक प्रभाव अत्यंत दूरगामी है। यह सुधार भारत की आर्थिक संरचना में नई ऊर्जा भरते हैं। एक ओर उद्योगों को सरल नियम और विनियमों का लाभ मिलेगा, जिससे निवेश, उत्पादन और रोजगार वृद्धि को नया आयाम प्राप्त होगा, दूसरी ओर श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा, सम्मान और अधिकारों की मजबूत आधार-शिला मिलेगी। यह उस भारतीय आदर्श का आधुनिक संस्करण है जिसमें श्रम को पूजा माना गया और श्रमिक को राष्ट्र-निर्माता।

इन सुधारों का प्रभाव केवल आर्थिक नहीं बल्कि सामाजिक भी है। श्रमिकों की आय में पारदर्शिता से समाज में विश्वास बढ़ेगा। महिला कार्यबल की भागीदारी बढ़ेगी। प्लेटफॉर्म अर्थव्यवस्था को विधिक मान्यता मिलने से लाखों युवाओं को औपचारिक अर्थव्यवस्था का हिस्सा बनने का अवसर मिलेगा। ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में नए रोजगार अवसर खुलेंगे और उद्यमिता को प्रोत्साहन मिलेगा।

अंततः ये श्रम संहिताएं भारत के आर्थिक उत्थान का ऐसा अध्याय हैं जो परम्परा और आधुनिकता के मेल का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

■■■

भारतीय नौसेना 4 दिसम्बर 2025 को तिरुवनंतपुरम में अपना स्थापना दिवस समारोह मना रही है। नौसेना का आधुनिकीकरण और विस्तार अनवरत जारी है, जिसमें विमानवाहक पोत, विध्वंसक, फ्रिगेट, पनडुब्बी और अन्य जलयान शामिल हैं। भारतीय नौसेना अब और अधिक आत्मनिर्भर, आधुनिक तथा स्वदेशी बनने की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रही है।

डॉ. सुरेंद्र कुमार मिश्र

आत्मनिर्भरता की ओर भारतीय नौसेना

भारतीय नौसेना हिंद महासागर एवं हिंद-प्रशांत में अनवरत बढ़ती चुनौतियों का उत्तर देने और शक्तिशाली 'ब्लू वॉटर नेवी' बनने की दिशा में न केवल आधुनिकीकरण की दिशा में कदम बढ़ाए है बल्कि 'मेक इन इंडिया' आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर हो चुकी है। अब स्पष्ट रूप से आधुनिकीकरण में एक रणनीतिक बदलाव के साथ ही हमारी नौसेना ने आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए स्वदेशी उत्पादन पर भी विशेष बल दिया है। भारतीय नौसेना का लक्ष्य न केवल आधुनिक अनेक श्रेणी के जलयानों तथा पनडुब्बियों का निर्माण करना है बल्कि प्रत्येक घटक व व्यवस्था में अब आत्मनिर्भरता लाना है। वर्तमान में हमारी नौसेना लगभग 145 युद्धपोत और पनडुब्बियों का संचालन कर रही है और लगभग 262 परियोजनाएं विकास के उन्नत चरण में हैं। अपने शताब्दी वर्ष 2047 तक भारतीय नौसेना पूरी तरह से आत्मनिर्भर बनाने की रणनीति पर कार्य कर रही है। इस प्रयास से देश की सामरिक और तकनीकी क्षमताओं को सशक्त, सक्षम एवं सार्थक बनाया जा रहा है।

हाल ही में भारतीय नौसेना में 'आईएनएस माहे' को तटीय रक्षा की पहली पंक्ति के रूप में शामिल किया गया है, जिससे तटीय सुरक्षा ढांचे को न केवल मजबूती मिली है बल्कि शत्रु की पनडुब्बियों को खोजकर ध्वस्त करने की अद्वितीय क्षमता में वृद्धि हुई है। 'माहे' क्लास का यह पहला एंटी-सबमरीन वारफेयर शैलो वाटर क्राट (एएसडब्लू-सीएसडब्लू) है, जो समुद्री निगरानी तथा तटीय सुरक्षा की अग्रिम पंक्ति में तैनात किया जाएगा और बड़े युद्धपोतों, पनडुब्बियों और नौसैनिक विमानन इकाईयों के साथ समन्वित रूप से काम करेगा। इसकी स्टील्थ क्षमता और तीव्र गतिशीलता के कारण इसे 'साइलेंट हंटर' भी कहा जाता है। यद्यपि इसका आकार देखने में छोटा दिखाई देता है, परंतु इसकी गति इतनी तेज है कि तटीय क्षेत्रों में कोई भी पनडुब्बी इसकी दृष्टि से बच नही सकती। भारतीय नौसेना की आत्मनिर्भरता और स्वदेशीकरण के प्रयास वर्ष 2047 तक पूरी तरह से आत्मनिर्भर नौसेना के

लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं। इन प्रयासों में स्वदेशी जलयानों और पनडुब्बियों का निर्माण, रक्षा उत्पादों की आयात प्रतिबंध सूचियां जारी करना और अनुसंधान और विकास पर बल देना शामिल है।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने घोषणा की है कि नौसेना नवाचार और स्वदेशीकरण संगठन (एनआईआईओ) के माध्यम से इस दिशा में अनेक पहल की जा रही हैं। जलयान निर्माण से लेकर अब अति आधुनिक तकनीकी परियोजनाओं तक लगभग सभी कार्य अब भारत में किए जा रहे हैं। भारतीय नौसेना के 262 विभिन्न प्रोजेक्ट डिजाइन एवं विकास परियोजनाएं उन्नत चरणों में पहुंच चुकी हैं। यह बदलाव भारत की बढ़ती रक्षा आत्मनिर्भरता का सशक्त प्रमाण है। कई भारतीय शिपयार्ड इस दशक के भीतर अपनी परियोजनाओं में शत-प्रतिशत स्वदेशी सामग्री उपयोग करने की ओर अग्रसर हैं।

हाल ही में भारतीय नौसेना ने 'इक्षक' नामक स्वदेशी सर्वे पोत को शामिल किया। इसे कोलकाता स्थित गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स (जीआरएसई) ने बनाया है। यह पोत भारत की जलयान निर्माण क्षमता और आत्मनिर्भरता का प्रतीक है। भारतीय नौसेना का आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ना केवल रक्षा क्षेत्र को सशक्त क्षमता का ही प्रतीक नहीं है बल्कि यह भारत की औद्योगिक क्षमता, तकनीकी नवाचार तथा वैश्विक स्तर पर आत्मविश्वास का भी प्रतीक है। आगामी वर्षों में यह कदम भारत को एक सशक्त समुद्री शक्ति के रूप में और अधिक सक्षम व शक्तिमान सिद्ध करेगा। यह भारत की रणनीतिक स्वतंत्रता, आर्थिक मजबूती तथा तकनीकी नवाचार का सूचक भी है। रक्षा क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की सीमा बढ़ाकर 74 प्रतिशत कर दी गई है और उन्नत तकनीक तक पहुंच के साथ शत-प्रतिशत तक बढ़ाया जा सकता है। भारतीय नौसेना के आत्मनिर्भरता का अभिप्राय है कि भारतीय शिपयार्ड में तैयार किए गए जलयान और स्वदेशी तकनीकी पर जोर देकर समुद्री क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना है। इसके अंतर्गत नौसेना विदेशी निर्भरता को कम करके अथवा सीमित करके अपनी रक्षा क्षमताओं को सशक्त व सक्षम बना रही है। अब प्रत्येक 40 दिनों में एक नया स्वदेशी युद्धपोत या पनडुब्बी नौसेना में शामिल की जा रही है। यह 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान का एक महत्वपूर्ण भाग है। आधुनिक जलयानों के निर्माण में नवीनतम सोनार तकनीक, उन्नत श्रेणी के सेंसर, हथियार प्रणाली तथा आधुनिक नेविगेशन उपकरणों का उपयोग किया जा रहा है।

■■■

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली
सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका

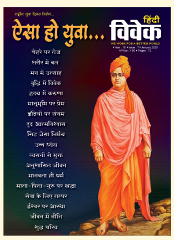

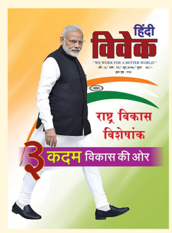

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

सदस्यता शुल्क

- वार्षिक मूल्य : रु. 500/-
- त्रैवार्षिक मूल्य : रु. 1,200/-
- पंचवार्षिक मूल्य : रु. 1,800/-
- संरक्षक मूल्य : रु. 20,000/-
- विदेशी सदस्यता शुल्क वार्षिक : रु. 5,000/-

खुद ग्राहक बनें व बनाएं

- जन्म दिन तथा अन्य समारोहों में हिंदी विवेक उपहार के रूप में भेंट करें।
- मित्रों, रिश्तेदारों तथा शुभचिंतकों को हिंदी विवेक की सदस्यता प्रदान करें।
- अपने दिवंगत स्नेहीजनों की स्मृति में 11, 21, 51 या 101 पाठकों को सदस्यता दें।
- विवाह के अवसर पर सदस्यता उपहार में दें।
- नववर्ष की शुभकामना के रूप में ग्रीटिंग कार्ड के स्थान पर हिंदी विवेक का सदस्यता रसीद प्रदान करें।

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

हिंदी विवेक कार्यालय
प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर 10, सेक्टर - 2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई - 400067
सम्पर्क : +91 95949 91884
hindivivekvargani@gmail.com / hindivivekadvt@gmail.com

सांस में घुलता प्रदूषण

अर्पणा झा

दिल्ली और उसके आसपास के क्षेत्रों में वायु प्रदूषण एक गम्भीर समस्या के रूप में खड़ा है। वहां की हवा इतनी प्रदूषित हो गई है कि सांस लेना भी लोगों का दुशवार हो गया है। बुजुर्ग हों या युवा या फिर बच्चे, सभी को वहां स्वास्थ्य सम्बंधी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण एक ऐसा संकट बन चुका है, जो नागरिकों के जीवन, स्वास्थ्य और मानसिक शांति पर गहरा असर डाल रहा है। उच्च स्तर के PM2.5 और PM10 प्रदूषक लगातार हवा में बने रहते हैं, जिसके कारण यहां रहने वाले करोड़ों लोगों की सांस लेने योग्य हवा संकट में बदल गई है। PM2.5 कण अत्यंत छोटे होते हैं, जो श्वसन तंत्र के सबसे गहरे हिस्सों में प्रवेश कर जाते हैं। इससे खांसी, सांस फूलना, अस्थमा, ब्रोंकाइटिस और फेफड़ों की क्षमता में कमी जैसी समस्याएं व्यापक रूप से बढ़ रही हैं। अस्पतालों में फेफड़ों और सांस से सम्बंधित रोगों के मामलों में तीव्र वृद्धि देखी जा रही है। कई रिपोर्टें दर्शाती हैं कि दिल्ली में लम्बे समय तक प्रदूषित हवा के सम्पर्क में रहने से व्यक्ति की जीवन अवधि में लगभग 7-8 वर्ष तक की कमी आ रही है। वायु प्रदूषण का असर आंखों पर भी पड़ता है- जलन, सूखापन, लालिमा, संक्रमण और दृष्टि धुंधलापन जैसे लक्षण दिल्ली और इसके आसपास के क्षेत्रों में आम हो गए हैं। बच्चों और बुजुर्गों में यह जोखिम कई गुना अधिक होता है क्योंकि उनकी प्रतिरोधक क्षमता कम होती है। नवजात शिशुओं और गर्भवती महिलाओं में प्रदूषण का प्रभाव अत्यधिक संवेदनशील पाया गया है। गर्भावस्था में उच्च प्रदूषण के सम्पर्क में समय से पहले प्रसव, कम जन्म-वजन और श्वसन-सम्बंधी जटिलताएं बढ़ जाती हैं। छोटे बच्चों के फेफड़े पूरी तरह विकसित नहीं होते, इसलिए वे हवा में उपस्थित विषैले कण अधिक मात्रा में अवशोषित करते हैं। यह उनके फेफड़ों के विकास, प्रतिरक्षा प्रणाली और मानसिक विकास पर दीर्घकालीन असर डाल सकता है। दिल और मस्तिष्क पर भी प्रदूषण का प्रभाव उतना ही चिंताजनक है। झच2.5 रक्तप्रवाह में घुसकर हृदय रोग, उच्च रक्तचाप, स्ट्रोक और धमनियों की सूजन जैसी जटिलताओं को बढ़ाता है। न्यूरोलॉजिकल प्रभावों पर हुए अध्ययनों ने दिखाया है कि लम्बे समय तक प्रदूषण में रहने से तनाव, चिंता, अवसाद, नींद की समस्या, स्मरणशक्ति में कमी और मानसिक स्पष्टता में गिरावट जैसी समस्याएं बढ़ जाती हैं। कई लोग ब्रेन फॉग जैसी स्थिति का भी अनुभव करते हैं, जिसमें मानसिक एकाग्रता कमजोर पड़ जाती है।

प्रशासन, न्यायालयों और सरकार पर प्रश्न इसलिए उठते हैं क्योंकि दशक भर से यह समस्या वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित है, लेकिन स्थायी समाधान- जैसे स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा, सार्वजनिक परिवहन का विस्तार, औद्योगिक उत्सर्जन पर सख्ती, बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण, निर्माण-धूल नियंत्रण और वाहनों के उत्सर्जन मानकों का कड़ाई से पालन- अब भी पर्याप्त स्तर पर लागू नहीं किए गए हैं। वायु प्रदूषण आज दिल्लीवासियों की सांसों पर ही नहीं बल्कि जीवन की गुणवत्ता, मानसिक स्वास्थ्य और पूरी पीढ़ी के भविष्य पर गम्भीर प्रश्नचिह्न बना हुआ है।

दिल्ली में बढ़ते प्रदूषण के समाधान के लिए सरकार और नागरिक दोनों को मिलकर प्रयास करने की आवश्यकता है। हरित क्षेत्रों का विस्तार, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग, कारपूलिंग, निर्माण गतिविधियों में नियंत्रण, कूड़ा जलाने पर रोक और पर्यावरण-सुरक्षात्मक नीतियों को सख्ती से लागू करना अत्यंत आवश्यक है। इसके साथ ही व्यक्तिगत स्तर पर छ95 मास्क का उपयोग, घर में एयर प्यूरीफायर का प्रयोग और सुबह-शाम बाहर जाने से बचाव भी काफी सीमा तक सहायक हो सकते हैं।

कुल मिलाकर दिल्ली का वायु प्रदूषण केवल एक पर्यावरणीय समस्या नहीं बल्कि एक गम्भीर स्वास्थ्य आपातकाल बन चुका है। यदि समय रहते प्रभावी कदम नहीं उठाए गए तो आने वाली पीढ़ियों के स्वास्थ्य पर इसके विनाशकारी प्रभाव साफ दिखाई देंगे। ■■■

50+ YEARS OF MOMENTUM
अर्थ सहकारेण कल्याणम्
दि कल्याण जनता सहकारी बँक लि.
मल्टी-स्टेट शेड्युल्ड बँक
सोने तारण कर्ज
जलद कर्ज
कमी प्रक्रिया शुल्क
व्याजदर
९.५०%* वार्षिक
* अटी व शर्ती लागू
TOLL FREE: 1800 233 1919
kalyanjanata.in
KJSBank

मुम्बई के लोकल ट्रेन में मराठी नहीं बोलने पर कुछ युवाओं ने 19 वर्ष के युवा छात्र की पिटाई कर दी, जिससे आहत होकर उस छात्र ने आत्महत्या जैसा आत्मघाती कदम उठा लिया। आखिर क्या कारण है कि युवाओं में अपनी भाषा को लेकर इतना आक्रोश बढ़ा था? इन युवाओं की मानसिक स्थिति क्या थी जिसके कारण इस तरह की घटना घटी।

भाषा विवाद की बलि

महाराष्ट्र के कल्याण में एक 19 वर्षीय छात्र की आत्महत्या की घटना ने सम्पूर्ण देश को चौंका दिया। उस छात्र को कुछ अन्य स्थानीय युवाओं के द्वारा इस बात के लिए पीड़ित किया गया कि वह हिंदी भाषा में बात कर रहा था। जब रेलगाड़ी के जनरल डिब्बे से अपने कॉलेज जाते समय वह छात्र कुछ लोगों से धक्का लगने पर उन्हें आगे खिसकने के लिए कहता है तो कुछ मराठी भाषी युवाओं का समूह उस छात्र से इस बात पर विवाद करता है कि वह हिंदी भाषा का प्रयोग क्यों कर रहा है और मराठी भाषा क्यों नहीं बोल रहा है? इसके बाद जब छात्र बताता है कि वह स्वयं मराठी है तो वह भीड़ उसे यह कहकर पीटती है कि तुम्हें मराठी बोलने में शर्म आती है? कॉलेज के प्रथम वर्ष का वह छात्र उन्हें बार-बार बताता है कि वह मराठी बोलना जानता है, इसके बाद भी मराठी भाषा के दम्भी युवाओं का ग्रुप उसे बुरी तरह पीटता है। इस घटना से डरा-सहमा हुआ वह छात्र अपने घर जाकर फांसी लगाकर आत्महत्या कर लेता है। यह घटना बहुत ही दुखद और हैरान कर देने वाली है। इससे सम्पूर्ण क्षेत्र के लोग आक्रोशित हो उठते हैं और छात्र को न्याय की मांग करने लगते हैं।

लड़के के पिता बताते हैं कि उनका बेटा पढ़ाई में काफी होनहार था और पढ़ाई-लिखाई के अलावा अन्य चीजों में समय व्यर्थ नहीं करता था। फर्स्ट ईयर में विज्ञान वर्ग का छात्र अपने जीवन में कुछ बड़े लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता था, लेकिन कुछ लोगों के द्वारा किए गए प्रताड़ना के कारण वह मानसिक रूप से इतना दुखी हुआ कि खुद को असहाय पाकर उसने अपनी जीवनलीला ही समाप्त कर ली। छात्र के पिता ने थाने में मामला दर्ज कर न्याय मांगते हुए कहा कि ऐसे भाषाई विवाद के कारण भविष्य में किसी और की जान न जाए।

देशभर में विभिन्न प्रकार के विवाद समय-समय पर होते रहते हैं और भाषा विवाद भी कोई नया विवाद नहीं है। भारत में स्वतंत्रता के बाद भड़के विवाद के कारण सबसे पहले भाषा के आधार पर ही पहले राज्य का गठन हुआ था और 1953 में बना यह राज्य आंध्र प्रदेश था। बाद में नए राज्यों के गठन के लिए 'राज्य पुनर्गठन आयोग' की स्थापना की गई। इसके द्वारा भाषा एवं संस्कृति के आधार पर नए राज्यों के गठन की सिफारिश की गई। इस प्रकार नए राज्यों के गठन का मार्ग प्रशस्त हुआ। आज देश के अनेक राज्यों में अनेक भाषाएं पढ़ी, लिखी और बोली जाती हैं। भाषाओं के अलावा अनेक स्थानीय बोलियां भी विभिन्न क्षेत्रों की पहचान हैं और 'विविधता में एकता' को प्रकट करती हैं। यह संघर्ष मूलतः किसी भाषा के विरोध स्वरूप नहीं बल्कि अपनी भाषा को उचित स्थान और राजकीय दर्जे की प्राप्ति हेतु प्रायः देखा गया है।

डॉ. हिमांशु थपलियाल

भाषाई आधार पर राजनीति भी लम्बे समय से चलती आई है और कई सारी

राजनीतिक पार्टियां इसी मुद्दे को लेकर गठित की गई हैं, किंतु सैद्धांतिक तौर पर होने वाला अन्य भाषाओं का विवाद आज जिस जानलेवा स्वरूप में पहुंच गया है, वह वास्तव में चिंताजनक है। भाषा के नाम पर कई बार कुछ राज्यों में हिंदी/अंग्रेजी के लिए विरोध, कहीं तमिल/तेलुगु, कभी मराठी/गुजराती आदि राजनीतिक विवाद होते रहते हैं, किंतु उनकी अपनी एक राजनीतिक सीमा रही है, पर यह घटना भाषाई राजनीति को अतिवाद की ओर संकेत करती है। ऐसे विवाद राष्ट्रीय एकता और अखंडता के लिए संकट तो पैदा करते ही हैं, अब नागरिक सुरक्षा के लिए भी घातक सिद्ध हो रहे हैं। यहां पर राजनीतिक दलों को भी समझना होगा कि वे युवाओं को अपनी भाषा का प्रयोग करना और संवर्धन करना सिखाएं। युवाओं को अपनी स्वदेशी स्थानीय भाषाओं को संरक्षित करने के लिए एकजुट करना है, न कि किसी भाषा के विरोध को लेकर। अन्य भाषा विरोध की बजाए स्थानीय भाषाओं के साहित्य का सृजन कर उसे समृद्ध बनाने के लिए युवा पीढ़ी को तैयार किया जाए।

इस घटना की समीक्षा करें तो ऐसा प्रतीत होता है कि हमला करने वाले युवा इस भावना से ग्रस्त हैं कि हमारे राज्य में हमारी अपनी भाषा बोली जानी चाहिए क्योंकि हमारी भाषाई पहचान पर संकट उत्पन्न हो रहा है। उनको ऐसा प्रतीत हो रहा है कि जो लोग मराठी भाषा नहीं बोल रहे हैं तो या वे राज्य से बाहरी लोग हैं या फिर मराठी होकर भी अपनी भाषा की उपेक्षा करके अन्य भाषाओं को इस पर महत्व दे रहे हैं। यह समझ कुछ राजनीतिक विचारधाराओं के अनुसरण करने का परिणाम हो सकती है और मारपीट का व्यवहार भी कहीं न कहीं पूर्व में हुई मारपीट की घटनाओं की तरह एक सामाजिक दुस्साहस का परिणाम है।

पीड़ित छात्र की पृष्ठभूमि एक होनहार छात्र की है जो भविष्य उन्मुखी दृष्टि से अपना अध्ययन करने के लिए कॉलेज जा रहा था और उसका भाषाई व्यवहार एक सामान्य नागरिक की तरह था, किंतु प्रतिक्रिया स्वरूप हुई मारपीट और धमकियों का उस पर बुरा मानसिक असर पड़ा, जिसे वह झेल नहीं पाया। यदि उन युवाओं द्वारा छात्र को पीटने की बजाए अपनी भाषा के प्रोत्साहन हेतु प्रेरित किया जाता तो आज वो छात्र अपनी जान नहीं देता। आज आवश्यकता है उन सभी राजनीतिक नेताओं को जो इस प्रकार की भाषावादी राजनीति करते हैं- वे युवाओं को बताएं कि अपनी भाषा आवश्यक है, लेकिन उससे ज्यादा आवश्यक है किसी व्यक्ति का आत्मसम्मान और उसका जीवन। यह आज की नई पीढ़ी को बताने की आवश्यकता है और यही भारतीय संस्कृति का जयघोष भी है कि 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः'। ■■■

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For A Better World
मासिक पत्रिका

शुल्क ₹ 500

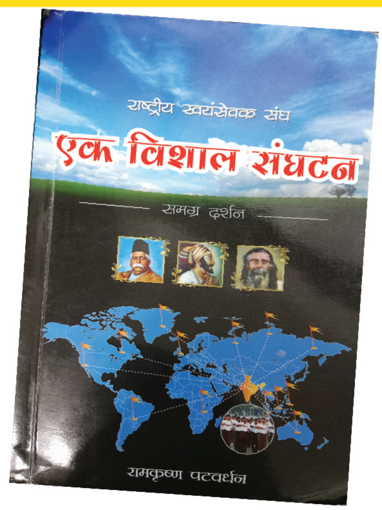

रा. स्व. संघ की स्थापना से लेकर शतकपूर्ति की यात्रा के विभिन्न पड़ावों तथा भविष्य के उद्देश्यों का सम्पूर्ण संकलन व आंकलन करने वाली पुस्तक

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाईन पंजीयन करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : **HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA-HINDI VIVEK**

Bank : Bank of Maharashtra **Branch :** Prabhadevi
A/C No. : 60085108000 **IFSC :** MAHB0000318

सम्पर्क - 9594991884 **Email : hindivivekvargani@gmail.com**

हिडमा का समर्थन राष्ट्रघाती है

डॉ. उदय भान सिंह

सरकार, शिक्षा-संस्थान, मीडिया और नागरिक-समाज, सब मिलकर ऐसे वैचारिक प्रदूषण की जड़ों को समझें और समय रहते ऐसे विनाशक, मानवता विरोधी व शैतानी मानसिकता से समाज व राष्ट्र का बचाव करें। युवाओं का प्रबोधन करें, उन्हें धर्म संस्कृति, राष्ट्रवाद से परिचित कराएं ताकि वे वामपंथ के भ्रमजाल में न फंसें।

हाल ही में दिल्ली के कुछ क्षेत्रों में तथा कथित युवाओं के दलों ने कुख्यात नक्सली आतंकवादी माडवी हिडमा के समर्थन में 'हिडमा अमर रहे', 'कितने हिडमा मारोगे, हर घर से हिडमा निकलेगा', लाल सलाम, जिंदाबाद जैसे नारे लगाए। इन देशविरोधी नारों का लगना विशेषकर एक पर्यावरण/वायु-प्रदूषण विरोधी प्रदर्शन की आड़ लेकर अर्बन नक्सली पैर्टन को दर्शाता है। इस घटना ने पूरे देश में आश्चर्य और चिंता पैदा कर दी है। शुरुआत में प्रदर्शन वायु प्रदूषण के विरुद्ध था, लेकिन अचानक स्थिति बदल गई। इस घटना में न केवल प्रदर्शन का उद्देश्य तिरोहित हुआ बल्कि समझा जाना कठिन नहीं है कि वायु प्रदुषण के विरुद्ध प्रदर्शन करना तो मात्र बहाना भर ही था।

दिल्ली का प्रदर्शन प्रदूषण विरोध या वैचारिक खेल था?

जब दिल्ली में वायु प्रदूषण के विरुद्ध प्रदर्शनों का आयोजन हुआ तो कई युवाओं, छात्र-समूहों ने हिस्सा लिया, लेकिन अचानक कुछ प्रदर्शनकारियों ने पोस्टर लहराएं जिनमें हिडमा की तस्वीरें थीं और 'हिडमा अमर रहे', 'लाल सलाम', 'नक्सलवाद जिंदाबाद' जैसे नारे अचानक लगाने लगे। पुलिस जब हस्तक्षेप करने गई तो कुछ लोगों ने मिर्च-स्प्रे का प्रयोग किया। परिणामस्वरूप पुलिस ने एफआईआर दर्ज की, कई गिरफ्तारियां हुईं।

इस घटना ने स्पष्ट कर दिया कि प्रारम्भिक पर्यावरण-विरोधी आंदोलन का छिपा एजेंडा अथवा उद्देश्य क्या था। वास्तव में वह एक योजनाबद्ध अलग से ही हिंसात्मक व रेसल्टिव

कौन था हिडमा और वह नक्सली आतंकी क्यों माना जाता था?

वास्तव में माडवी हिडमा दक्षिण भारत के (बस्तर क्षेत्र) का कुख्यात माओवादी/नक्सली कमांडर था। उस पर कई दशकों में सुरक्षा बलों व नागरिकों पर हमला-घात, छापेमारी, हिंसा करने के संगीन आरोप थे। हिडमा का एनकाउंटर 18 नवम्बर 2025 को सुरक्षा बलों के साथ हुई मुठभेड़ में हुआ। इसे पुलिसबल ने बस्तर क्षेत्र में माओवादी गतिविधियों के लिए बड़ी सफलता बताया है।

(वामपंथ/नक्सली) एजेंडा ही था। जिसके माध्यम से मुट्ठी भर लोगों ने नक्सल, अर्बन नक्सल व अराजकता वादी प्रॉपेगेंडा को फैलाने का असफल प्रयास करते हुए बेवजह का हंगामा किया।

यहां यह भी विचारणीय है कि यह खतरनाक वैचारिक प्रदूषण इतनी कम आयु के युवाओं में आया कैसे? जिम्मेदार कौन हो सकते हैं?

यहां कुछ मुख्य कारण और ऐसे तंत्र को समझना बहुत आवश्यक है जो उक्त घटनाओं को अंजाम देने के लिए प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से जिम्मेदार दिखाई देते हैं।

नक्सली/वामपंथी संगठनों की सक्रियता

रिपोर्टों में सामने आया है कि दिल्ली प्रदर्शन के पीछे कथित रूप से भगत सिंह छात्र एकता मंच और द हिमखंड जैसे संदिग्ध समूह थे। जिन्होंने प्रदूषण विरोध के नाम पर युवा-छात्रों को इकट्ठा किया, लेकिन असली उद्देश्य नक्सली विचारधारा को बढ़ावा देना था।

युवा-उन्माद और भावनात्मक आर्कषण

कई बार युवा, विशेषकर छात्र, सामाजिक असंतोष, अन्याय या सरकार की नीतियों से निराशा में आसानी से भावनात्मक हो कर जुड़ जाते हैं। कुछ समूह यह जान-बूझ कर न्याय, जनतंत्र, वर्ग-संघर्ष जैसे स्लोगन देते हैं, ताकि असंतुष्ट युवा उन विचारों को पकड़ कर विद्रोही हो सकें।

बहुत से युवाओं को नक्सलवाद, हिंसा और उनका वास्तविक इतिहास ठीक से पता नहीं होता। जब कोई नारा, पोस्टर या गायन आता है तो वे आलोचनात्मक रूप से नहीं सोच पाते कि क्या सही है और क्या गलत है।

छुपा एजेंडा-मुद्दा बदल देना

दिल्ली प्रदर्शन से स्पष्ट है कि प्रदूषण जैसे स्वाभाविक व नागरिक-हित के मुद्दों को एक बड़े, राजनीतिक, हिंसात्मक एजेंडे से जोड़ने का प्रयास हो रहा था यानी बस प्रदर्शन को ही हाइड मूवमेंट में बदल देना और अवसर पर अफरा-तफरी फैलाकर राष्ट्र विरोधी षड्यंत्रों को अंजाम देना। इस प्रकार हम स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि इस वैचारिक प्रदूषण का निशाना केवल कुछ भोले-भाले युवा ही नहीं होते बल्कि इसके पीछे संगठित तंत्र और रणनीति का परिणाम होता है।

कुछ समूह, जिन्होंने नारे लगाए कदाचित् हिडमा को उस आदिवासी/न्याय-संघर्षकर्ता के रूप में पेश करते हैं, जिसने गरीब, आदिवासी, वंचितों के लिए लड़ाई लड़ी और उसे जननायक या क्रांतिकारी बना देना चाहते हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि हिडमा पर हजारों हत्याओं, जवानों व नागरिकों पर हमलों जैसे संगीन आरोप थे।

ऐसे में उसे क्रांतिकारी बताना बिना पूरे संदर्भ, इतिहास, न्याय-सिद्धांत व सामाजिक नुकसान देखे, व्यापक बेईमानी व षड्यंत्र ही है। यह न केवल उन असली आदिवासी/वंचितों के संघर्ष का अपमान है जिन्होंने वास्तव में आदिवासी समाज के उत्थान व कल्याण के लिए पूरा जीवन लगा दिया। ऐसे सुनियोजित प्रदर्शन समाज को हिंसा व आतंकवाद की ओर ले जाते हैं। जिनपर समय रहते लगाम लगाना बहुत आवश्यक है।

जैसा कि ऊपर कहा, जैसे भगत सिंह छात्र एकता मंच और द हिमखंड संगठन अर्थात् अर्बन नक्सल प्रवृत्ति के, जिन्होंने नागरिक समस्याओं (जैसे प्रदूषण) को हथियार बनाकर एक राजनीतिक/हिंसात्मक एजेंडा को आगे बढ़ाने का प्रयास किया। सोशल मीडिया, ग्रुप-चैट्स और छात्रों में असंतोष फैलाने वाले तत्व यानी, वह जो युवा मन को प्रभावित करना जानते हैं। जो न्याय, वर्ग-संघर्ष, बहुसंख्यक वंचितों आदि जैसे शब्दों से भावनात्मक जोड़ युवाओं के बीच घुसकर बनाते हैं।

दिल्ली में हिडमा अमर रहे जैसे नारों की घटना सिर्फ एक तटस्थ प्रदर्शन की घटना नहीं है। यह उस बड़े खतरे की झलक है, जहां असली नागरिक समस्याओं (प्रदूषण, बेरोजगारी, असमानता) का उपयोग करके हिंसात्मक, नक्सली या उग्रवादी विचारधारा छुपाई या फैलायी जा रही है। हम, समाज के जिम्मेदार नागरिक, इसे हल्के में न लें क्योंकि आगे चलकर इन्हीं का रूपांतरण अर्बन नक्सली के रूप में होता है जो शहरों में बैठकर देशविरोधी गतिविधियों में जुटे रहते हैं।

■■■

पुराने वाहनों पर शिकंजा

नए नियम

क्या आपके पास पुराने वाहन हैं और आप इसे सड़क पर सरपट भगाते हैं तो जरा सम्भल जाईए, आपके वाहनों पर सरकार की अब टेढ़ी दृष्टि हो गई है। सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय ने अब पुराने वाहनों को सड़कों पर लाने वालों पर लगाम कस दि है।

पर्यावरण व सड़क सुरक्षा को लेकर सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय ने कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। जिनमें सरकार ने 2025 से वाहन रखरखाव के सम्बंध में नियमों में बदलाव किया है, जिसके अंतर्गत पुराने वाहनों के नवीनीकरण शुल्क में वृद्धि और समय सीमा में कमी की गई है।

अब 20 वर्ष से अधिक पुराने हल्के वाहनों के नवीनीकरण शुल्क को दोगुना करके 10,000 कर दिया गया है। इसके अलावा 15 वर्ष से पुराने वाहनों के लिए रजिस्ट्रेशन रिन्यूअल फीस में भारी वृद्धि की गई है। यदि वाहन की आयु सीमा पार हो जाती है तो उसे निर्धारित समय सीमा के भीतर स्क्रैप करना होगा।

शुल्क में वृद्धि

हल्के मोटर वाहन (20 वर्ष से अधिक पुराने): नवीनीकरण शुल्क को 5,000 से दोगुना करके 10,000 कर दिया गया है।

15 वर्ष से पुराने वाहन: पुनर्नोंदणी शुल्कों में बड़ी वृद्धि की गई है, जैसे कि 8,000 की जगह अब 12,000 से 18,000 तक का भुगतान करना होगा।

समय सीमा में कमी

15 वर्ष से पुराने वाहन: यदि वाहन 15 वर्ष की आयु पूरी कर चुका है और उसका रजिस्ट्रेशन रिन्यू नहीं किया गया है तो उसे घर पर रखना गैरकानूनी होगा।

स्क्रैपिंग अनिवार्य: आयु पूरी करने के 180 दिनों के भीतर वाहन को पंजीकृत स्क्रैपिंग या संग्रहण केंद्रों पर अनिवार्य रूप से जमा करना होगा।

अन्य बदलाव

कुछ राज्यों में 50 वर्ष से अधिक पुराने वाहनों के लिए 'विंटेज' श्रेणी में पंजीकरण की सुविधा भी शुरू की गई है।

इन नियमों का उद्देश्य पुराने, प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों को सड़कों से हटाकर वायु प्रदूषण को कम करना, सड़क सुरक्षा में सुधार करना और एक संगठित वाहन पुनर्चक्रण प्रणाली बनाना है।

सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय (MoRTH) ने 20 वर्ष से ज्यादा पुराने वाहनों के रजिस्ट्रेशन नवीनीकरण शुल्क में वृद्धि की है।

कुछ मुख्य बातें:

इस शुल्क वृद्धि का उद्देश्य पुराने वाहनों को सड़क से हटाना और प्रदूषण कम करना है।

यह नियम दिल्ली-एनसीआर पर लागू नहीं होता क्योंकि वहां पहले से ही पुराने वाहनों के लिए अलग नियम हैं। ■■■

मान्यता

पुरानी परम्पराएं केवल मान्यताएं नहीं थीं, वे उस समय की परिस्थितियों के अनुरूप एक सुविचारित सामाजिक व्यवस्था का हिस्सा थीं। आज विज्ञान और तकनीक ने बहुत प्रगति कर ली है, लेकिन इन परम्पराओं के मूल में छिपे संदेश-सुरक्षा, स्वच्छता, स्वास्थ्य, पर्यावरण और अनुशासन- आज भी उतने ही मूल्यवान हैं।

परम्पराएं और पीछे छिपे तथ्य

लवकुश तिवारी

भारतीय संस्कृति में परम्पराओं का एक विशाल भंडार है। सदियों से लोग इन्हें मानते आए हैं और आज भी अनेक परिवारों में इनका पालन किया जाता है। आधुनिक समय में कई लोग इन परम्पराओं को अंधविश्वास मानकर अनदेखा कर देते हैं, वहीं कुछ लोग इन्हें पूरी श्रद्धा से निभाते हैं। प्रश्न यह उठता है कि क्या इन परम्पराओं के पीछे कोई वैज्ञानिक या व्यावहारिक कारण हैं? क्या ये मात्र रूढ़ियां हैं या इनके पीछे कोई सामाजिक, स्वास्थ्य और पर्यावरण सम्बंधी तर्क भी छिपा है? आइए, हम कुछ ऐसी प्रमुख परम्पराओं को समझने का प्रयास करते हैं।

रात में दही या दूध नहीं खरीदना या खाना

पुराने समय में कहा जाता था कि रात के समय दही नहीं खरीदना चाहिए और न ही खाना चाहिए। इसके पीछे कई कारण थे।

व्यवहारिक कारण

पहले के समय में फ्रिज जैसी शीतलन व्यवस्था नहीं थी। दही जल्दी खट्टा हो जाता था और रात में इसे सुरक्षित रखना कठीन होता था। दुकानों में भी स्वच्छता के उचित साधन नहीं होते थे, इसलिए रात में खरीदा गया दही स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता था।

वैज्ञानिक कारण

दही एक जीवित संस्कृति वाला उत्पाद है जिसमें लैक्टिक एसिड बैक्टीरिया सक्रिय रहते हैं। रात में शरीर का पाचन तंत्र धीमा हो जाता है। ऐसे में दही पचने में परेशानी पैदा कर सकता है, विशेषकर सर्दियों में। इसलिए रात में दही खाने से बलगम बनने या पाचन गड़बड़ होने की सम्भावना बढ़ जाती है।

मासिक धर्म के दौरान पूजा न करना या अचार न छूना यह विषय आधुनिक समाज में भी विमर्श का कारण है, लेकिन इसके पीछे भी कुछ पारम्परिक और वैज्ञानिक पहलू हैं।

स्वास्थ्य और विश्राम का उद्देश्य

प्राचीन समय में घर का अधिकांश कामकाज महिलाओं के जिम्मे होता था। मासिक धर्म के दौरान शरीर कमजोर पड़ता है, एनीमिया और दर्द की सम्भावना रहती है। ऐसे में महिलाओं को आराम मिल सके, इसलिए उन्हें पूजा-पाठ और अन्य कार्यों से दूर रखा जाता था। इसे निषेध के रूप में बताया गया ताकि परिवार इसे कठोर नियम की तरह पालन करे।

अचार न छूने का वैज्ञानिक कारण

पहले अचार मिट्टी के बर्तन या कांच के जार में खुले वातावरण में रखा जाता था। उसमें प्राकृतिक किण्वन चलता था। महिलाओं के शरीर में इस दौरान हार्मोनल बदलाव होते हैं, जिनके कारण शरीर का तापमान और उष्मा बदलती रहती है। प्राचीन लोग मानते थे कि इससे किण्वन प्रक्रिया प्रभावित हो सकती है, हालांकि आधुनिक विज्ञान इसे सिद्ध नहीं करता, लेकिन स्वच्छता की दृष्टि से यह एक सावधानी के रूप में माना जा सकता है।

व्यवहारिक और सुरक्षा कारण

अतीत में प्रकाश व्यवस्था सीमित थी। रात में दीपक या मोमबत्ती जलाकर अगरबत्ती या धूपक जलाना आग लगने का संकट बढ़ाता

था। इसलिए रात में इन्हें प्रयोग न करने की सलाह दी जाती थी।

स्वास्थ्य कारण

रात में अगरबत्ती या धूप से निकलने वाला धुआं बंद कमरों में जमा हो जाता है और श्वसन तंत्र को हानि पहुंचा सकता है। नींद की गुणवत्ता भी प्रभावित होती है। इसलिए कहा गया कि रात को सुगंधित और धूम्र-उत्पादक वस्तुओं का प्रयोग न करें।

रात में झाड़ू न लगाना

सामाजिक-आर्थिक कारण

पुराने समय में घर का कचरा बाहर निकालने की व्यवस्था दिन में ही होती थी। रात में सफाई करने से छोटा-मोटा सामान भी कचरे में चला जाता था, जिसे अंधेरे में देखा नहीं जा सकता था। आर्थिक रूप से सीमित परिवारों में इस हानि को भी बहुत गम्भीरता से लिया जाता था। इसलिए कहा गया कि रात में झाड़ू लगाने से लक्ष्मी रूठ जाती है- यानी धन की हानि होती है।

प्रकाश की कमी

बिजली नहीं होती थी। दीपक की रोशनी में झाड़ू लगाने से गंदगी ठीक से हटती नहीं थी और कीड़े-मकोड़े बढ़ने का संकट रहता था।

शाम को बाल नहीं बनाना

स्वच्छता और स्वास्थ्य कारण

पहले सड़क और घरों में धूल अधिक होती थी। दिनभर की धूल और गंदगी शाम तक बालों में चिपक जाती थी। शाम को बाल बनाते समय यह गंदगी कमरे में फैल सकती थी या आंख-नाक में जा सकती थी।

इसके अलावा रात में गिरने वाले बाल भोजन या पूजा स्थल में घुस सकते थे, जिससे स्वच्छता भंग होती थी।

अंधविश्वास रूपांतर

बाद में इसे इस तरह कहा गया कि शाम को बाल बनाने से नकारात्मकता बढ़ती है या अशुभ माना जाता है ताकि लोग इस आदत से बचें।

सूर्यास्त के बाद नाखून नहीं काटना

प्राचीन समय में रोशनी कम थी। चाकू या उस्तरे से गलती से चोट लग सकती थी। बाद में इसे अपशकुन से जोड़ दिया गया।

रात में तुलसी न तोड़ना

रात में पौधे प्रकाश संश्लेषण नहीं करते और उनमें कुछ रासायनिक प्रक्रियाएं चलती रहती हैं। तुलसी धार्मिक रूप से पूजनीय मानी जाती है, इसलिए रात में उसे छूना भी अनुचित माना गया।

शाम के बाद घर में सीटी न बजाना

जंगल और गांवों में सीटी पर जानवर आकर्षित हो सकते थे। साथ ही यह एक अनुशासनात्मक सामाजिक नियम भी था।

यदि हम इन परम्पराओं को आंख मूंदकर नहीं बल्कि तर्क और समझ के साथ अपनाएं तो वे हमारे जीवन को और अधिक संतुलित, सुरक्षित और स्वस्थ बना सकती हैं।

■■■

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली

सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका

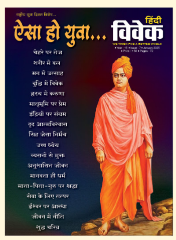

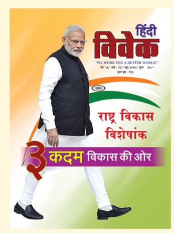

हिंदी विवेक

" We Work For A Better World"

सदस्यता शुल्क

- वार्षिक मूल्य : रु. 500/-
- त्रैवार्षिक मूल्य : रु. 1,200/-
- पंचवार्षिक मूल्य : रु. 1,800/-
- संरक्षक मूल्य : रु. 20,000/-
- विदेशी सदस्यता शुल्क वार्षिक : रु. 5,000/-

खुद ग्राहक बनें व बनाएं

- जन्म दिन तथा अन्य समारोहों में हिंदी विवेक उपहार के रूप में भेंट करें।
- मित्रों, रिश्तेदारों तथा शुभचिंतकों को हिंदी विवेक की सदस्यता प्रदान करें।
- अपने दिवंगत स्नेहीजनों की स्मृति में 11, 21, 51 या 101 पाठकों को सदस्यता दें।
- विवाह के अवसर पर सदस्यता उपहार में दें।
- नववर्ष की शुभकामना के रूप में ग्रीटिंग कार्ड के स्थान पर हिंदी विवेक का सदस्यता रसीद प्रदान करें।

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

हिंदी विवेक कार्यालय

प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर 10, सेक्टर - 2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई - 400067

सम्पर्क : +91 95949 91884

hindivivekvargani@gmail.com / hindivivekadvt@gmail.com

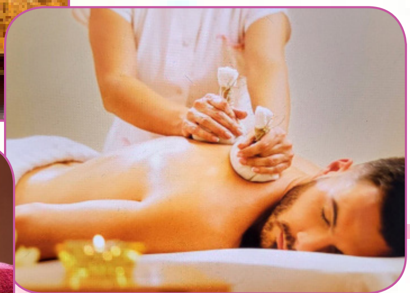
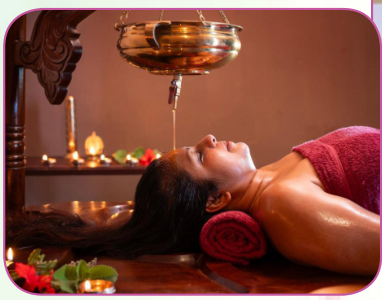

आधुनिक जीवनशैली में तनाव, मानसिक थकान, शारीरिक परेशानियां आम हो गई हैं। ऐसे में स्पा थेरेपी तन और मन दोनों को सुकून देता है। स्पा मुख्यत: दो प्रकार के होते हैं आयुर्वेदिक स्पा और आधुनिक स्पा। इस आलेख में दोनों पर गहन चर्चा की गई है।

तन और मन को सुकून देता स्पा

यदि आप किसी बीमारी से ग्रसित हैं या आपके शरीर में होने वाले दोषों की प्रकृति से ग्रसित हैं या फिर अपने शरीर को डिटॉक्स करना चाहते हैं तो आयुर्वेदिक स्पा आपके लिए वरदान ही सिद्ध होने वाला है। वहीं आप बहुत थके हुए हैं, किसी जगह पर हॉलिडे प्लान कर रहे हों और थकान दूर कर नई उर्जा का संचार करना चाहते हों या फिर सुंदर दिखने व सौंदर्य निखारने की चाह हो और भीड़ में कुछ अलग दिखना चाहते हैं तो बस फिर क्या चटपट आधुनिक स्पा आपके लिए लाभदायी सिद्ध हो सकता है। आयुर्वेदिक और आधुनिक स्पा के बीच मुख्य अंतर उनके दृष्टिकोण और उपचार की विधि में है।

आयुर्वेदिक स्पा

आयुर्वेदिक स्पा समग्र स्वास्थ्य, दोष (वात, पित्त, कफ) संतुलन और प्राकृतिक उपचारों पर ध्यान केंद्रित करता है, जो व्यक्तिगत शरीर के प्रकार के लिए तैयार किए जाते हैं। वहीं, आधुनिक स्पा तत्काल विश्राम, तनाव से राहत और सौंदर्य जैसे लक्ष्यों पर केंद्रित होते हैं।

आयुर्वेदिक स्पा और आधुनिक स्पा के बीच क्या अंतर है, हम आपको विस्तार से बताते हैं।

आयुर्वेदिक स्पा में जो उपचार होता है उसमें विशेषत: औषधीय तेलों और जड़ी-बूटियों का प्रयोग किया जाता है। उनके द्वारा प्रयोग किए जाने वाले तेलों की प्रकृति भी अलग और विशेष प्रकार की होती है। विशेष उपचार शामिल होते हैं, जैसे अभ्यंग (गर्म तेल मालिश) या पोटाली (हर्बल पाउच मालिश) आदि शामिल है।

जिससे केवल शारीरिक लाभ ही नहीं बल्कि और भावनात्मक स्वास्थ्य भी बेहतर बनता है, जो शरीर को पूरी तरह से डिटॉक्स तो करता ही है, साथ ही साथ दीर्घकालिक स्वास्थ्य लाभ प्रदान करने के लिए काम करता है। आयुर्वेदिक स्पा के कई और लाभ भी हैं। यह केवल शरीर को आराम ही नहीं देता बल्कि बेहतर नींद को भी बढ़ाता है, यहां तक कि पुराने से पुराने दर्द में भी आराम दिलाता है। कई पुरानी बीमारियों को भी ठीक करने में आयुर्वेदिक स्पा सहायक होता है।

आधुनिक स्पा

एक ओर जहां आयुर्वेदिक स्पा के कई सारे लाभ हैं, वहीं आधुनिक स्पा भी स्वास्थ्य की दृष्टि से लाभ प्रदान करता है। आधुनिक स्पा हमें क्षण भर में आराम व तनाव रहित बनाता है। यहां तक कि इनसे आराम के बाद यह सौंदर्य को भी निखारता है।

आधुनिक स्पा में इसमें विभिन्न प्रकार के तेल व क्रीम शामिल होते हैं, जिससे शरीर का मसाज, फेशियल और बॉडी रैप्स आदि किया जाता है, जो मांसपेशियों को आराम प्रदान करता है, जिससे तनाव रफूचक्कर भी हो जाता है।

■■■

केरल सहित देशभर में हिंदू विरोधी - देशविरोधी वैचारिक चुनौती का उत्तर देने में रंगा हरि दक्ष थे। उन्होंने वामपंथी नैरेटिव को न केवल ध्वस्त किया बल्कि हिंदुत्व व राष्ट्रवाद के नैरेटिव को स्थापित करने में बड़ी भूमिका निभाई।

संघ के साहित्यिक योद्धा रंगा हरि

रंगा हरि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक वरिष्ठ प्रचारक और सम्मानित विचारक थे। वह एक कुशल लेखक भी थे, जिन्होंने कई भाषा में 50 से अधिक पुस्तके लिखीं और कई वर्षो तक संघ के अखिल भारतीय बौद्धिक प्रमुख के रूप में कार्य किया। वे लीक से हटकर सोचने में माहिर थे और उन्होंने कई सहयोगियों को लीक से हटकर सोचने और अपनी सीमाओं से आगे सोचने के लिए प्रोत्साहित किया। वे लोगों को अलग तरह से सोचने और गहन अध्ययन के लिए लगातार प्रोत्साहित करके नए विचारों को पोषित करते थे। उनके व्यक्तित्व में संघर्ष व स्वाध्याय सक्रियता एवं वैचारिकता विनम्रता सदैव साकार और जीवंत रहती थी।

100 वर्ष पूरे करने वाली संघ की यात्रा को डॉक्टर हेडगेवार, श्रीगुरुजी, दीनदयाल उपाध्याय और दत्तोपंत ठेंगड़ी जैसे मौलिक चिंतकों ने वैचारिक आधार भूमि प्रदान की थी। रंगा हरि इस परम्परा के वर्तमान चिंतक थे। वे बहुमुखी प्रतिभा और ज्ञान के लिए जाने जाते थे। उन्होंने अपने लेखन और विचारों से केरल में सामाजिक-सांस्कृतिक आंदोलन को बहुत प्रभावित किया। गम्भीर और गुढ़ विषयों के उदाहरणों सहित अपनी विशिष्ट मनोरंजन नाट्य शैली में समझाना उनकी विशिष्ट विशेषता थी।

भाषा सीखने में उनका अद्भुत उत्साह था। गुजरात की उनकी प्रारम्भिक यात्रा के दौरान ही उन्होंने थोड़े समय में ही गुजराती पढ़ना और लिखना सीख लिया। निरंतर अध्ययन और चिंतन के प्रति समर्पित उन्होंने विविध विषयों पर अपनी लेखनी चलाई। अपने जीवन आचरण और व्यवहार से उन्होंने लोगों को बहुत कुछ दिया।

उन्होंने अपनी अंतिम प्रार्थना तीन श्लोक में कही -

मामिकान्तिम् प्रार्थना
करणीयं कृतं सर्वम् तज्जन्म सुकृतं मम्
धन्येस्मि कृतकृत्योस्मि गच्छामद्य चिरं गृहम्
कार्यार्थ पुनरायतुम् तथाप्यशास्ति मे हृदि
मित्रै सह कर्म कुर्वम स्वान्तः सुखमावाप्रुयाम् एषा चेत्
प्रार्थना धृष्टा क्षमास्व करुणानिधे
कार्यमिदं त्वैवस्ति तावकेच्छा बलीयसी

अर्थात जो कार्य सौंपा गया था उसे पूरा करके मैं कृतज्ञ हूं और आज मैं अपने परमधाम को प्रस्थान करता हूं। साथ ही मैं पुनः इस कार्य में संलग्न होने के लिए पुनः आना चाहता हूं। मुझे विश्वास है कि अपने सहकर्मियों के साथ इस कार्य को और अधिक करने में मुझे आत्मसंतुष्टि प्राप्त होगी। यदि मैं अपनी इस प्रार्थना में कोई गलती की है तो हे दया के भंडार मुझे क्षमा करें। यह कार्य भी आपका है और आपकी इच्छा सर्वोच्च है।

रंगा हरि जिज्ञासु प्रवृत्ति के थे। वे कभी चैन से नहीं बैठते थे। उनकी वैचारिक गहनता एवं विश्लेषणात्मक दृष्टि के परिणाम स्वरुप उन्होंने अपनी बहुमुखी प्रतिभा और ज्ञान के आधार पर अनेक महत्वपूर्ण कृतियां लिखीं। उनके द्वारा लिखे गए कुछ उपन्यास जैसे भारती का सपूत, लाखिमा की आंखें, मेरी भव बाधा हरो, आदि विभिन्न ऐतिहासिक और धार्मिक व्यक्तित्व के जीवन पर आधारित कृतियां हैं। उनके द्वारा द्रौपदी पर लिखी पुस्तक अत्यंत रोचक है। उनका जीवन भारत माता की सेवा और राष्ट्रीयता के विचार को समर्पित था और उनके साहित्य को इस विचारधारा की महत्वपूर्ण धरोहर माना जाता है। 2023 में उनका निधन हो गया। उनके साहित्यिक कार्य और विचार आज भी प्रासंगिक एवं धातव्य है।

डॉ. नीतू गोस्वामी

दिनविशेष- जन्म-दिवस (1 दिसम्बर)

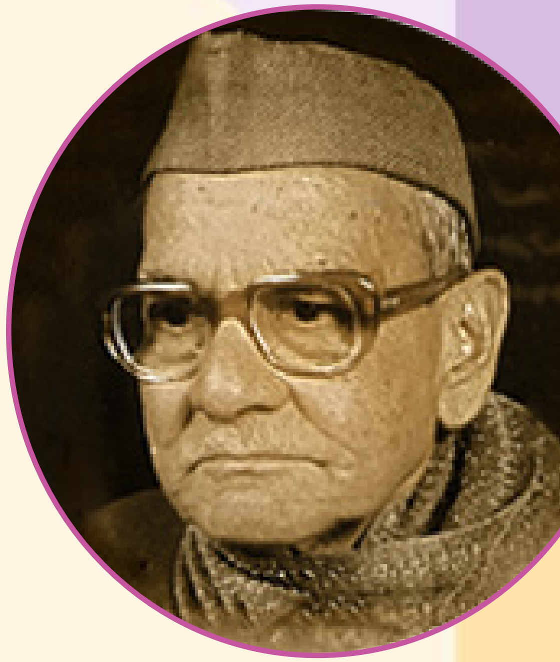

बाल साहित्यकार द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी बाल साहित्यकार थे। उनके द्वारा लिखी गई बाल रचनाएं बच्चों के मन, मस्तिष्क व जिह्वा पर तो रहते ही थीं, साथ ही बच्चों पर एक अमिट प्रभाव भी छोड़ती थीं। उनके कई कालजयी गीत आज भी हिंदी के पाठ्यक्रम में हैं।

अच्छे और कालजयी साहित्य की रचना एक कठिन कार्य है, पर इससे भी कठिन है, बाल साहित्य का सृजन। इसके लिए स्वयं बच्चों जैसा मन और मस्तिष्क बनाना होता है। द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी ऐसे ही एक साहित्यकार थे, जिनके लिखे गीत एक समय हर बच्चे की जिह्वा पर रहते थे।

द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी का जन्म 1 दिसम्बर, 1916 को आगरा (उ.प्र.) के रौहता गांव में हुआ था। बाल्यकाल से ही वे अत्यंत मेधावी थे। अतः पढ़ने में सदा आगे ही रहते थे, पर बच्चों के लिए लिखे जाने वाले गद्य और पद्य साहित्य में कठिन शब्दों और भावों को देखकर उन्हें बहुत पीड़ा होती थी। इस कारण बच्चे उन गीतों को याद नहीं कर पाते थे। उनका मत था कि यदि बच्चों को अच्छे और सरल भावपूर्ण गीत दिए जाएं तो वे गंदे फिल्मी गीत नहीं गाएंगे। अतः उन्होंने स्वयं ही इस क्षेत्र में उतरकर श्रेष्ठ साहित्य के सृजन को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया।

उन्हें पढ़ने और पढ़ाने का बड़ा चाव था। पढ़ने के लिए वे इंग्लैंड भी गए, पर आजीविका के लिए उन्होंने भारत में शिक्षा क्षेत्र को चुना। अनेक महत्वपूर्ण पदों पर काम करते हुए वे शिक्षा निदेशक और निदेशक साक्षरता निकेतन जैसे पदों पर पहुंचे। उनके कई कालजयी गीत आज भी हिंदी के पाठ्यक्रम में हैं और बच्चे उन्हें बड़ी रुचि से पढ़ते हैं।

उनके एक लोकप्रिय गीत 'हम सब सुमन एक उपवन के' से बाल समीक्षक कृष्ण विनायक फड़के बहुत प्रभावित हुए। उत्तर प्रदेश के सूचना विभाग ने अपने प्रचार पटों में इस गीत को लिखवाया और उर्दू में भी 'हम सब फूल एक गुलशन के' पुस्तक प्रकाशित की। श्री माहेश्वरी ने बच्चों के लिए 30 से भी अधिक पुस्तकें लिखीं। साक्षरता विभाग में काम करते समय उन्होंने नवसाक्षरों के लिए भी 5 पुस्तकें लिखीं। इसके अतिरिक्त भी उन्होंने कई काव्य संग्रह और खंड काव्यों की रचना की।

उन दिनों बड़े लोगों के लिए देश के हर भाग में कवि सम्मेलन होते थे। यह देखकर माहेश्वरी जी ने बाल कवि सम्मेलन प्रारम्भ कराए। उत्तर प्रदेश में शिक्षा सचिव रहते हुए उन्होंने कई कवियों के जीवन पर वृत्त चित्र बनवाए। इनमें सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' पर बनवाया हुआ वृत्त चित्र अविस्मरणीय है।

उन्हें साहित्य सृजन के लिए देश के सभी भागों से अनेक मान-सम्मान मिले, पर जब उनके गीतों को बच्चे सामूहिक रूप से या नाट्य रूपांतर कर गाते थे तो वे उसे अपना सबसे बड़ा सम्मान मानते थे। माहेश्वरी जी जहां वरिष्ठ कवियों का सम्मान करते थे, वहीं नए साहित्यकारों को भी भरपूर स्नेह देते थे। आगरा के केंद्रीय हिंदी संस्थान को वे एक तीर्थ मानते थे। इसमें जो विदेशी या भारत के अहिंदीभाषी प्रांतों के छात्र आते थे, उनके साथ माहेश्वरी जी स्वयं बड़ी रुचि से काम करते थे।

'हम सब सुमन एक उपवन के', 'वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो', 'जिसने सूरज चांद बनाया', 'इतने ऊंचे उठो कि जितना उठा गगन है...' जैसे अमर गीतों के लेखक द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी का 29 अगस्त, 1998 को देहावसान हुआ। उनकी आत्मकथा 'सीधी राह चलता रहा' उनके जीवन का दर्पण है। ■■■

जीवनसंगिनी अभियान के अंतर्गत कन्यादान समारोह सम्पन्न

मलाड पूर्व स्थित नूतन विद्यालय में विगत दिवस जीवनसंगिनी अभियान के अंतर्गत कन्यादान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें अनेक समाजसेवी एवं स्थानीय नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। इस अवसर पर द्वारिकामाई चैरिटी संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष गौरीशंकर चौबे विशेष रूप से उपस्थित रहे और अपने करकमलों से कन्यादान की पवित्र विधि सम्पन्न कर नवविवाहित जोड़े को आशीर्वाद प्रदान किया।

समाज के उत्थान और बेटियों के सम्मान हेतु संस्था का यह निरंतर अभियान आज पूरे क्षेत्र के लिए प्रेरणा का स्रोत बन चुका है। सेवा और समर्पण की भावना से वर्षों से जारी यह पहल आगे भी समाजहित में इसी दृढ़ता के साथ संचालित रहेगी। समारोह में उपस्थित लोगों ने इस सामाजिक कार्य की सराहना की और संस्थाध्यक्ष चौबे जी तथा उनकी टीम के प्रयासों को साधुवाद दिया।

सोलर पैनल निर्माण प्रकल्प का उद्घाटन

छत्रपति संभाजीनगर। सोलर पैनल निर्माण प्रकल्प का उदघाटन सोमवार, 24 नवम्बर को कम्पनी के प्रांगण में सम्पन्न हुआ। रामकृष्ण मठ एवं रामकृष्ण मिशन मुख्यालय बेलूर मठ, कोलकाता के सहसचिव स्वामी बोधसारानंद महाराज, रामकृष्ण मिशन आश्रम के प्रमुख स्वामी विष्णुपादानंद महाराज ने इसका उद्घाटन किया। इस अवसर पर कम्पनी के संस्थापक संचालक संजयअप्पा बारगजे, अंजलि जिंतुरकर, संगीता बारगजे, संजय जिंतुरकर के साथ कई अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे।

प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा गौरवशाली -तिब्बती राष्ट्रपति

लखनऊ। तिब्बती निर्वासित सरकार (केंद्रीय तिब्बती प्रशासन-सीटीए) के महामहिम राष्ट्रपति पेम्पा त्सेरिंग जी वॉरियर्स डिफेंस अकाडमी के कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। कोर ग्रुप फॉर तिब्बतियन काज के क्षेत्रीय संयोजक (यू.पी. एवं उत्तराखंड) डॉ. संजय शुक्ला ने कार्यक्रम की प्रस्तावना रखी। इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि अखिल भारतीय सेना परिषद के क्षेत्रीय संगठन मंत्री रिचर्ड रॉयल, भारतीय सेना के खुफिया विभाग के वरिष्ठ अधिकारी ब्रिगेडियर राकेश भाटिया, पूर्व सैनिक सेवा परिषद के क्षेत्रीय संगठन मंत्री मेजर आनंद टंडन, जे.पी. ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन के जेपी सिंह, वरिष्ठ पत्रकार और बहुभाषी न्यूज एजेंसी इंस्टीट्यूट न्यूज के स्टेट ब्यूरो प्रमुख दिलीप शुक्ला और वॉरियर्स डिफेंस अकादमी के निदेशक गुलाब सिंह ने स्वागत किया।

वॉरियर्स डिफेंस अकादमी में अपने सम्बोधन में तिब्बती राष्ट्रपतिपेम्पा त्सेरिंग ने कहा कि तिब्बती लिपि भारतीय गुप्त लिपि से विकसित हुई थी और उन्होंने भारत की प्राचीन नालंदा परम्परा की बौद्ध शिक्षाओं को संरक्षित करने में तिब्बत की दीर्घकालिक भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने कहा, ये सांस्कृतिक परम्पराएं प्राचीन भारतीय ज्ञान के एक महत्वपूर्ण भंडार के रूप में काम करती रहती हैं।

TJSB SAHAKARI BANK LTD. MULTI-STATE SCHEDULED BANK
Bharose ka Bank Bhavishya ka Bank

With low-interest rates and flexible terms, cruise in style while reducing your carbon footprint

Green Car Loan starting at 8.00%* p.a.

*T&C apply

www.tjsb.bank.in | ✆ : -022-48897204